शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321-9645

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 21, अंक 6, मार्च 2022

एक रचनात्मक क्रान्ति

मूल्य 25/-रू

चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्रा

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है। देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तें: 1. रचना मौलिक होनी चाहिए, 2. प्रतियोगिता दो चरणों में होगी. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। आयोजन स्थल पर ही एक विषय दिया जाएगा। दिए गए विषय पर 30 मिनट के अंदर रचना लिखकर देनी होगी और उसी रचना का काव्य पाठ करना होगा। 3. द्वितीय चरण के विजेता को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा शेष प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्रप्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

चतुर्थ लघु कथा सम्राट प्रतियोगिता

पुररकार राशि 5001/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तें: 1. रचना मौलिक होनी चाहिए, 2. मौलिकता का प्रमाण पत्रदेना अनिवार्य होगा। प्रतियोगिता के दो चरण है। दूसरे चरण के समस्त प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र दिया जाएगा। विजयी प्रतिभागी को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। विजेता को 5001रुपये नगर, स्मृति चिन्हतथा लघु कथा सम्राट का ताज प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये तीन सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नाम:

'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान' बैंक : युनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा : प्रीतम नगर, इलाहाबाद खाता संख्या: 538702010009259 आई.एफ.एस. कोड: यूबीआईएन0553875

आवेदन की अंतिम तिथि 15 मार्च 2022

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी-93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011,

ह्वाटसएप नं0: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्ष : 21, अंक : 06
मार्च : 2022

इस अंक में......

छत्तीसगढ़ का संक्षिप्त ifjp;----â...........09

बस्तर की लोक संस्कृति... 12

पर्यटकों को आकर्षित करता छत्तीसगढ़ का धमतरी जिला 13

इस अंक के अतिथि संपादक

अतिथि संपादक
डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक

सहयोगी संपादक :
डॉ० सरस्वती वर्मा

सहयोग :
डॉ० रेशमा अंसारी
लक्ष्मीकांत वैष्णव 'मनलाभ'

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः ज्ञानबर्द्धक एवं संग्रहणीय अंक साबित होगा 04
अतिथि संपादक 05
शुभकामनाएं 06
छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा का अंतसंबंध 14
महानदी बेसिन में कृषि का अधुनिकीकरण 15
लोक साहित्यं 17
व्यंग्य : भैंस की पुकार 19
स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी...... 20
संस्मरण : लॉक डाउन में छोटी, नाना संग सतभावां .23, 26
रोचक इतिहास समेटे हुए है रायपुर 24

कविताए/गीत/ग़ज़लः डॉ० मीता अग्रवाल, डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक, गया प्रसाद साहू, डॉ० सरस्वती वर्मा, श्रीमती निवेदिता वर्मा, भुवनेश्वरी जायसवाल, अर्चना पाण्डेय, डॉ० कल्पना मिश्रा, देवानंद बोरकर, हरिशंकर झारराय, लक्ष्मीकांत वैष्णव, राम मणि यादव, दीपिका दास, नम्रता ध्रुव 28–33

कहानीः सुधा वर्मा, रतिराम गढ़ेवाल, बगुलाराम की नीयति, तपती रेतल 35–38

लघु कथाएंः सरला शर्मा, शैल चन्द्रा, रेशमा अंसारी, सुमन शर्मा बाजपेयी 39–41

समीक्षा : 'मनलाभ मंजरी' युवा रचनाकार की युवा सोच 42

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा

संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सहयोगी संपादक
डॉ० सीमा वर्मा

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.–93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद –211011 का0: 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन–विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन–जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद–विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

ज्ञानबर्द्धक एवं संग्रहणीय अंक साबित होगा

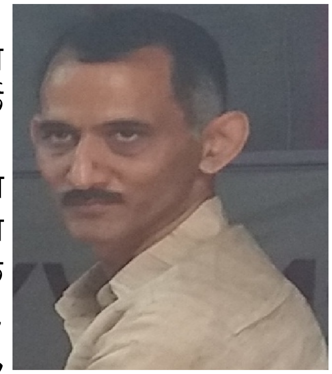

प्रिय पाठकों

विश्व स्नेह समाज मासिक का यह अंक हम विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की छत्तीसगढ़ इकाई को समर्पित कर रहे हैं। इस अंक में आपको सिर्फ छत्तीसगढ़ राज्य के साहित्यकारों/रचनाकारों की ही रचनाएं पढ़ने को मिलेगी। जिसमें कुछ लब्ध प्रतिष्ठित रचनाकारों से लेकर युवा रचनाकारों की रचनाएं पढ़ने को मिलेगी। इस अंक के सभी सम्मानित रचनाकारों का विशेष आभार जिन्होंने संस्थान के प्रतिनिधियों के आग्रह को स्वीकार कर अपनी रचनाएं हम तक पहुंचाई। इस अंक में आपको छत्तीसगढ़ का परिचय, बस्तर की लोक संस्कृति, पर्यटन की दृष्टि में धमतरी जिला से लेकर छत्तीसगढ़ी और हिन्दी भाषा का सम्बंध, छत्तीसगढ़ की कृषि, लोक साहित्य, व्यंग्य, शोध आलेख, संस्मरण, आध्यात्म, कविताएं, कहानियां, लघु कथाएं तथा समीक्षा की विविधता से भरपूर सामग्री पढ़ने को मिलेगी।

हमारा निरन्तर यह प्रयास रहा है कि हम नवीन प्रयोग करते रहे। कुछ प्रयासों में हम असफल भी हुए है लेकिन अधिकांश प्रयास हमारे सफल साबित हुए है। इसी कड़ी में यह नवीन श्रृंखला राज्य पर आधारित अंक, इस तरह के पूर्व में भी अंक प्रकाशित हुए है। लेकिन यह अंक अपने आप में अलग तरह का और नवीन प्रयोग है। आगामी अंको में आपको कर्नाटक, महाराष्ट्र सहित अन्य राज्यों की जानकारी के साथ ही साथ, संस्कृति, समाज, आध्यात्म, पर्यटन, कहानियों, लघु कथाओं का अद्भुत अंक पढ़ने को मिलेगें।

संस्थान के सम्मानित अध्यक्ष डॉ० शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख जी का भी आभार व्यक्त करना चाहूंगा कि आपका सहयोग संस्थान को निरन्तर मिलता रहता है। इस अंक को तैयार करने में भी आपकी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है।

इस अंक के संपादन एवं सामग्री एकत्र करने में सहयोग के लिए मैं संस्थान की छत्तीसगढ़ की प्रभारी डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक, प्रतिनिधि डॉ० सरस्वती वर्मा, डॉ० रेशमा अंसारी एवं श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव जी को साधुवाद देना चाहूंगा जिनके परिश्रम एवं सहयोग से हम यह अंक आप तक पहुंचा पा रहे हैं। छत्तीसगढ़ इकाई की यह खासियत रही है कि संस्थान की गतिविधियों को आगे बढ़ाने में हमेशा अग्रणी भूमिका निभाई है। इस बार भी छत्तीसगढ़ इकाई ने अग्रणी भूमिका निभाते हुए संस्थान के नवीन प्रयास में आगे बढ़कर अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। सहयोगी संपादिका डॉ० सीमा वर्मा जी की संशोधन में महत्वपूर्ण भूमिका को कमत्तर नहीं आंक सकता। आप सभी को साधुवाद।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास भी है कि प्रस्तुत अंक न केवल आपके लिए ज्ञानवर्धक होगा बल्कि पठनीय एवं संग्रहणीय भी होगा।

इसी आशा के साथ

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
संपादक/सचिव
विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

अतिथि संपादक

15 जून 1996 को स्थापित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश वैश्विक स्तर पर एक ऐसा स्वैच्छिक हिंदी संस्थान है, जो लगातार राष्ट्रीय स्तर के साहित्यकारों, कवियों, समाजसेवियों, शिक्षाविदों के सम्मान सहित विविध साहित्यिक सामाजिक उपक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का समावेश प्रमुख रूप से हो रहा है।

संस्थान का मुख्य उद्देश्य हिंदी का प्रचार प्रसार, हिंदी का विकास, रचनाकारों की रचनाओं को प्रकाशित करना सहित आभासी संगोष्ठी के माध्यम से विभिन्न राज्यों के द्वारा साहित्यिक गोष्ठी, कवि सम्मेलन, सामाजिक विषय पर गोष्ठी आयोजित करना आदि। युवा संगठन तथा बाल संसद के माध्यम से युवाओं व बालकों को प्रोत्साहित किया जाता है।

संस्थान की मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' जो लगातार 21 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। छत्तीसगढ़ इकाई का सौभाग्य है कि मार्च 2022 की पत्रिका का अंक छत्तीसगढ़ विशेषांक के रुप में प्रकाशित होने जा रहा है, जिसमें छत्तीसगढ़ प्रांत के साहित्यकार, विद्वान, शिक्षाविद एवं समाज सेवियों द्वारा छत्तीसगढ़ की संस्कृति, सभ्यता, पर्यटन, ऐतिहासिक आलेख एवं कविताएं सम्मिलित है। छत्तीसगढ़ इकाई के सदस्यों द्वारा लगन और निष्ठा से पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ है।

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के अध्यक्ष महोदय डा. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे, महाराष्ट्र का मार्गदर्शन छत्तीसगढ़ इकाई को प्रगति की राह पर ऊंचे शिखर तक पहुंचा रहा है।

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के सचिव एवं विश्व स्नेह समाज के संपादक डॉ. गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी जी की लगन, निष्ठा और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद, जिनका अपूर्व सहयोग प्राप्त हुआ है।

पत्रिका प्रकाशन में सहयोग करने वाले छत्तीसगढ़ इकाई के संपादक मंडल सदस्य डॉ. सरस्वती वर्मा, डॉ. रेशमा अंसारी, श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव जी के प्रति मैं हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूं।

मुझे विश्वास है कि यह अंक समस्त विद्वानों, शिक्षाविदों, पाठक गण तथा शोधार्थियों को आत्मिक संतुष्टि प्रदान करेगा।

जय हिंद। जय भारत। जय हिंदी।

डॉ. मुक्ता कान्हा कौशिक
हिंदी सांसद/छत्तीसगढ़ प्रभारी
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, परिवार सादर नमन् करता है।

संस्थान की संरक्षिका रही

स्व० डॉ० राज बुद्धिराजा

के **पांचवी** जन्म दिवस पर।

डॉ. केशरी लाल वर्मा
कुलपति

पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय,
रायपुर, छ.ग.-492010, भारत
कार्या०: 771–2262857
ईमेलः vc_raipur@prsu.org.in
मो०: 8527324400

शुभकामना

रायपुर, दिनांक 04 फरवरी, 2022

यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज छत्तीसगढ़ इकाई द्वारा संस्थान की मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' के छत्तीसगढ़ विशेषांक मार्च-2022 का अंक प्रकाशित होने जा रहा है।

मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका में छत्तीसगढ़ प्रांत के साहित्यकार, विद्वान, शिक्षाविद् तथा समाजसेवियों से आमंत्रित छत्तीसगढ़ की संस्कृति, सभ्यता, पर्यटन, ऐतिहासिक आलेख एवं कविताओं को यथोचित स्थान प्राप्त होगा एवं जनसामान्य को इस से परिचित एवं प्रेरित होने का अवसर प्राप्त होगा।

पत्रिका के प्रकाशन की सफलता के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(केशरी लाल वर्मा)

प्रतिः
डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक
प्रभारी/हिन्दी सांसद, छत्तीसगढ़

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, परिवार सादर नमन् करता है।

संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष रहे

स्व० पवहारी शरण द्विवेदी

की **दसवीं** पूण्यतिथि 25 मार्च पर।

प्रो० के०पी०यादव
कुलपति

मैट्स यूनिवर्सिटी
आरंग-खरोरा हाईवे, आरंग, रायपुर,
छ.ग.-493441, भारत
का०: 771-4078994, 95, 96, 98
वेब: www.matsuniversity.ac.in

शुभकामना

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश की मासिक पत्रिका 'विश्व स्नेह समाज' का मार्च-2022 का छत्तीसगढ़ विशेषांक के रूप में प्रकाशन होने जा रहा है, यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है। ज्ञात है, प्रतिष्ठित पत्रिका निरंतर देश और दुनिया में हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने में अग्रणी है। प्रस्तुत अंक में छत्तीसगढ़ के रचनाकारों के सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक लेख, कविताएँ, कहानी एवम् अन्य सामग्री का समावेश होगा, जो हर्ष का विषय है। परिणामतः छत्तीसगढ़ की सभ्यता, संस्कृति से सुधी पाठक अवगत होंगे। कुल मिलाकर यह अंक रोचक व पठनीय बनकर अपनी उपयोगिता सिद्ध करने में सफल रहेगा। छत्तीसगढ़ इकाई की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मैट्स विश्वविद्यालय परिवार की ओर से बहुत बहुत शुभकामनाएँ....

प्रो० के.पी. यादव

विश्व हिन्दी सेवा संस्थान द्वारा शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें:

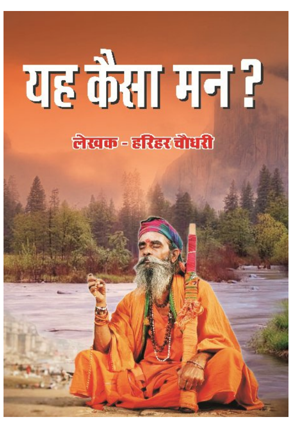

लेखकः
श्री हरिहर चौधरी
गंजाम, उड़ीसा

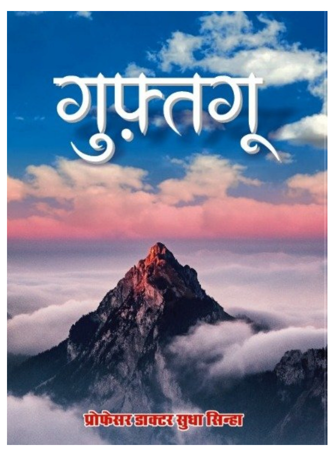

लेखक :
डॉ० सुधा सिन्हा
पटना, बिहार

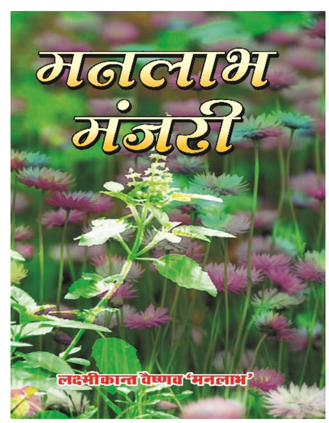

रचनाकार :
श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव,
जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

डॉ. शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख
अध्यक्ष

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान
प्रयागराज, उ०प्र०
1सी/304, एच.एम. सोसायटी, तालाब फैक्टरी के सामने, कोंढ़वा,
पुणे-411048, महाराष्ट्र
संपर्क : 9850119687

शुभ संदेश

मुझे अतीव प्रसन्नता है कि विश्व की प्रतिष्ठित स्वैच्छिक हिंदी प्रचार प्रसार संस्था 'विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान', प्रयागराज, उत्तर प्रदेश के तत्वावधान में 'विश्व स्नेह समाज' पत्रिका का छत्तीसगढ़ इकाई की ओर से 'छत्तीसगढ' विशेषांक प्रकाशित हो रहा है। छत्तीसगढ़ राज्य की अपनी अनुपम एवं बहुआयामी विशेषताएं हैं। प्रस्तुत विशेषांक छत्तीसगढ़ राज्य की भाषा, इतिहास, सभ्यता, संस्कृति व साहित्यिक गतिविधियों से अवगत कराने में अपनी अमूल्य उपयोगिता को सिद्ध करेगा। साहित्य की लोकप्रिय विधाओं का अवलोकन करने का सुअवसर प्रस्तुत विशेषांक के माध्यम से उपलब्ध होगा।

पत्रिका के इस अंक के संपादक मंडल के सभी सदस्यों, लेखकों व कवियों को हार्दिक मंगलकामनाएं।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

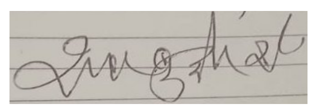

डॉ० शहाबुद्दीन नियाज़ मुहम्मद शेख

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, परिवार सादर नमन् करता है।

संस्थान की संस्थापक संरक्षक रही

स्व० राजरानी देवी

की **पांचवी** पूण्यतिथि 21 मार्च पर।

छत्तीसगढ़ (दक्षिण कोशल) का संक्षिप्त परिचय

छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है, जिसे धान का कटोरा कहा जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवंबर 2000 को हुआ था। पहले यह मध्य प्रदेश के अंतर्गत था क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का दसवां सबसे बड़ा राज्य है। संसाधन संपन्न राज्य है यह देश के लिए बिजली और इस्पात का एक स्रोत है।

-डॉ० सरस्वती वर्मा

हिंदी विभागाध्यक्ष, शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय, महासमुंद, छत्तीसगढ

सिरपुर का लक्ष्मण मंदिर

छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम दक्षिण कोशल था जो छत्तीसगढो को अपने में समाहित रखने के कारण कालांतर में छत्तीसगढ़ बन गया। छत्तीसगढ़ वैदिक और पौराणिक काल से ही विभिन्न संस्कृतियों के विकास का केंद्र रहा है। इस क्षेत्र का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों जैसे रामायण और महाभारत में भी है। यहां के प्राचीन मंदिर तथा उनके भग्नावशेष इंगित करते हैं, कि यहां पर वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्धिक के साथ ही अनेक संस्कृतियों का विभिन्न कालों में प्रभाव रहा है।

छत्तीसगढ़ एक कृषि प्रधान राज्य है, जिसे धान का कटोरा कहां जाता है। छत्तीसगढ़ राज्य की स्थापना 1 नवंबर 2000 को हुआ था। पहले यह मध्य प्रदेश के अंतर्गत था क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का दसवां सबसे बड़ा राज्य है। संसाधन संपन्न राज्य है यह देश के लिए बिजली और इस्पात का एक स्रोत है जिसका उत्पादन कुल स्टील का 15% है।

छत्तीसगढ़ का भूगोल-छत्तीसगढ़ के उत्तर में उत्तर प्रदेश और उत्तर पश्चिम में मध्य प्रदेश का शहडोल संभाग, उत्तर पूर्व में उड़ीसा और झारखंड, दक्षिण में तेलंगाना,आंध्र प्रदेश और पश्चिम में महाराष्ट्र राज्य स्थित है। यह प्रदेश ऊंची नीची पर्वत श्रेणियों से घिरा हुआ घने जंगलों वाला राज्य है। यहां साल, सागौन, साजा, बीजा और बांस के वृक्षों की अधिकता है। यहाँ सबसे ज्यादा मिश्रित वन पाया जाता है। सागौन की कुछ उन्नत किस्में छत्तीसगढ़ के वनों में पाई जाती है। छत्तीसगढ़ क्षेत्र के बीच में महानदी और उसकी सहायक नदियों

भोरमदेव मंदिर

का एक विशाल और उपजाऊ मैदान का निर्माण करती है, जो लगभग 80 किलोमीटर चौड़ा और 322 किमी० लंबा है। समुद्र सतह से यह मैदान करीब 300 मीटर ऊंचा है। इस मैदान के पश्चिम में महानदी तथा शिवनाथ का दोआब है। इस मैदानी क्षेत्र के भीतर है रायपुर दुर्ग और बिलासपुर जिले के दक्षिणी भाग धान की भरपूर पैदावार के कारण धान का कटोरा कहा जाता है। मैदानी क्षेत्र के उत्तर में है मैकल पर्वत श्रृंखला सरगुजा की उच्चतम भूमि ईशान कोण में है। पूर्व में उड़ीसा की छोटी-बड़ी पहाड़ियां है और आग्नेय में सिहावा के पर्वत शृंग है। दक्षिण में बस्तर भी गिरी मालाओं से भरा हुआ है। छत्तीसगढ़ के तीन प्राकृतिक खंड है उत्तर में सतपुड़ा, मध्य में महानदी और उसकी सहायक नदियों का मैदानी क्षेत्र और दक्षिण में बस्तर का पठार। राज्य की प्रमुख नदियां है-महानदी, शिवनाथ, खारून, अर्पा, पैरी तथा इंद्रावती नदी है।

छत्तीसगढ़ राज्य में लगभग 93 मूल्यों का प्रचलन है छत्तीसगढ़ी बोली का प्रयोग जहां सर्वाधिक किया जाता है इसके बाद हल्बी बोली का प्रयोग होता है।

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थलः छत्तीसगढ़ में अनेक ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक स्थल हैं जो पर्यटन की दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। यह छत्तीसगढ़ के गौरवशाली इतिहास को बयान करते हैं। यहां सिरपुर नामक स्थान है जहां भगवान बुद्ध आए थे तथा सम्राट अशोक ने स्तूप भी बनवाया था। दीपक नाम स्थान पर खुदाई करने से अनेक मंदिर प्राप्त हुए हैं। इस स्थान से शाक्य एवं समुदाय के पुरातात्विक अवशेष प्राप्त हुए हैं। सिरपुर के दर्शनीय स्थलों में लाल ईंटों से निर्मित लक्ष्मण मंदिर सर्वाधिक प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण महारानी वास्ता ने अपने पति हर्ष गुप्त की याद में कराया था। यह मूल रूप से विष्णु मंदिर है। अभिलेख के अनुसार इस मंदिर का निर्माण 650 ईसवी के आसपास है। लक्ष्मण मंदिर के अतिरिक्त यहां राम मंदिर, गंधेश्वर महादेव मंदिर एवं संग्रहालय आदि दर्शनीय है, जो पर्यटकों का मन मोह लेती है।

सिरपुर का लक्ष्मण मंदिरः छत्तीसगढ़ का भोरमदेव मंदिर जिसकी समानता खजुराहो के मंदिर से की जाती है। मल्हार में ताम्रकार से लेकर मध्यकाल तक का क्रमबद्ध इतिहास प्राप्त हुआ है। मंदिर की दीवारों पर हाथी, घोड़े, गणेश, नटराज एवं रती प्रकार की प्रतिक्रिया करती हुई मिथुन मूर्तियां स्थापित है। यह मूर्तियां खजुराहो की मूर्तियों से मिलती जुलती है, इस कारण भोरमदेव मंदिर को छत्तीसगढ़ का खजुराहो है।

भोरमदेव मंदिरः देवबलोदा दुर्ग में प्राचीन शिव मंदिर है ताला गांव में देवरानी जेठानी मंदिर जो गुप्त काल के स्थापत्य कला का बोध कराती है। बारसूर दंतेवाड़ा जिला में स्थित है यह विशालकाय गणेश प्रतिमा के लिए जानी जाती है। यहां ठंडक नागवंशी का शासन रहा है।

छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थलः कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान- यह घाटी लगभग 200 वर्ग किलोमीटर में फैला है। कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान एवं विस्तृत नाम पर्णपाती प्रकार के वनों का एक विशिष्ट मिश्रण है,जिसमें साल, सागौन, टीक और बांस के पेड़ बहुतायत में है। राज्य पक्षी बस्तर मैना एक प्रकार का निर्माण है जो मानव आवाज का अनुकरण करने में सक्षम है। जंगल दोनों प्रवासी और निवासी पक्षियों का घर है यह आश्चर्यजनक भूगर्भीय संरचनाओं के लिए प्रसिद्ध है।

बस्तर में कांगेर वैली राष्ट्रीय उद्यान भी मुख्य पर्यटन स्थल है। इसे कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान के

नाम से भी जाना जाता है यहां खूबसूरत प्राकृतिक स्थल झरने और जंगली जानवर ऊंची ऊंची चोटियां घना जंगल गुफाएं देखने के लिए मिलते हैं इसकी स्थापना 1982 में की गई थी।

तीरथगढ़ जलप्रपात- जगदलपुर से 35 किलोमीटर की दूरी पर स्थित यह मनमोहक जलप्रपात पर्यटकों का मन मोह लेता है। मुनगा बहार नदी पर स्थित यह जलप्रपात चंद्राकर रूप से बनी पहाड़ी से 300 फीट नीचे सीढ़ी नुमा प्राकृतिक संरचना ऊपर गिरता है। पानी के गिरने से बना दूधिया झाग एवं पानी की बूंदों का प्राकृतिक फव्वारा पर्यटकों को मंदिर मंद भिगो देता है।

तीरथगढ़ जलप्रपातः नारायण पाल मंदिर जगदलपुर के उत्तर पश्चिमी तरफ चित्रकूट झड़ने से जुड़ा हुआ नारायण बाल मंदिर इंद्रावती नदी के दूसरे किनारे पर स्थित है इस गांव में प्राचीन विष्णु मंदिर है जो 1000 साल पहले बनाया गया था।

छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण दिशा में स्थित बस्तर जिला खूबसूरत जंगलों और आदिवासी संस्कृति में रंगा है। बस्तर प्रदेश के सांस्कृतिक राजधानी के तौर पर जाना जाता है। बस्तर जिला छत्तीसगढ़ प्रदेश के कोंडागांव, दंतेवाड़ा सुकमा, बीजापुर जिलों में घिरा हुआ है। बस्तर का जिला मुख्यालय जगदलपुर है।

बस्तर जिले का चित्रकूट जलप्रपात जिले का एक मुख्य पर्यटन स्थल है। यह जलप्रपात इंद्रावती नदी में बना हुआ है। यह जलप्रपात बहुत ही विशाल है। बस्तर जिले के मुख्यालय से करीब 40 किलोमीटर दूर है। चित्रकूट जलप्रपात का आकार घोड़े के नाल के समान है। यह जलप्रपात बहुत चौड़ा और सुंदर है। पूरे भारतवर्ष में यह प्रसिद्ध है। इस जलप्रपात को नाइग्रा फाल के नाम से जाना जाता है यह 95 फीट ऊंचा है।

चित्रकूट जलप्रपात : कुटुमसर गुफा यह गुफा कांगेर वैली नेशनल पार्क के अंदर घने जंगलों के बीच में कांगेर नदी के पास स्थित है इस गुफा को गोपाल सर के नाम से भी जाना जाता है इन गुफाओं में लाइमस्टोन की बहुत ही सुंदर संरचना देखने के लिए मिलती है यह गुफाएं भूमिगत है। इस गुफा को सन 1991 में जाने-माने ज्योग्राफर डाक्टर शंकर तिवारी द्वारा सर्वे किया गया था। यह गुफा 330 मीटर लंबी और 75 मीटर गहरी है।

कुटुमसर गुफाः बस्तर में इस प्रकार अनेक पर्यटन स्थल है जो पर्यटकों का मन मुग्ध कर देते हैं।

बस्तर की शिल्प कला- बस्तर के शिल्प कला में शुमार बेल मेटल में ढाई हजार ईशा पूर्व की हड़प्पा सभ्यता झलकती है सिंधु क्षेत्र की कला में जैसे हाथी घोड़े व देवी-देवताओं के चित्र मिलते हैं वैसा ही चित्र बेल मेटल में होता है। माना जाता है कि दंडकारण्य क्षेत्र के आदिवासियों के पूर्वजों का संबंध हड़प्पा सभ्यता से रहा होगा। कला से जुड़े शिल्पी आज भी मोम के सांचे में मेटल को ढ़ालकर मूर्तियां बनाने का परंपरागत तरीका अपनाते हैं।

बस्तर के कला कौशल को मुख्य रूप किया गया है। मुख्य रूप से लकड़ी के फर्नीचरो में बस्तर की संस्कृति, त्योहारों, जीव-जंतु, देवी-देवताओं की मूर्तियां साज-सज्जा की कलाकृतियां बनाई जाती है। छत्तीसगढ़ का बस्तर क्षेत्र अपनी कला विरासत के लिए प्रसिद्ध है।

इस प्रकार छत्तीसगढ़ सांस्कृतिक एवं प्राकृतिक संपदा से समृद्ध राज्य है। जिसमें अनेक पुरातात्विक धरोहर, तीर्थ स्थल, पर्यटन स्थल है जो पर्यटकों का मन मोह लेते हैं।

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये, पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन –1500/रुपये, संरक्षकः 11000/रुपये खाता संख्या – 66600200000154, आईएफएससी कोड–(BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई-मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें।

बस्तर की लोक संस्कृति

बस्तरांचल आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल है। यह अंचल आदिकाल में श्रृगी ऋषि, कंक ऋषि, मुचकुंद ऋषि, की तपोभूमि रहा है। बस्तर-कांकेर की संस्कृति में लिंगो संस्कृति की बड़ी व्यापकता है। बस्तरांचल में घोटुल मुरिया समाज में प्रचलित सास्कृतिक संस्थान युवा गृह घोटूल की आराधना के केंद्र बिन्दु है।

डॉ. आरती बोरकर
सहा. प्राध्यापक-हिन्दी, शा.दा.क. कला एवं वाणिज्य स्नोतकोत्तर महाविद्यालय, बलौदा बाजार-भाटापारा, छ०ग० मो. 9977212861

छत्तीसगढ़ राज्य के दक्षिण पूर्व में स्थित बस्तरांचल अपनी अनोखी संस्कृति व परम्पराओं के लिए विश्वविख्यात है। अनेक कारणों से बस्तर और कांकेर राज्य आज भी इतिहासकारों के लिए एक पहेली और एक चुनौती है। प्राचीन काल में इस क्षेत्र को दण्डकारण्य तथा गुप्त काल में महाकान्तर कहते थे। अपनी विशिष्ट भौगोलिक संरचना, विपुल प्राकृतिक संपदा, इन्द्रधनुषी आदिम संस्कृति और यंत्र-तंत्र बिखरी पुरातात्विक धरोहरो के लिए बस्तराचंल विशेष प्रसिद्ध है।

आर्य और अनार्य संस्कृतियों का संगम स्थल होने के कारण इस क्षेत्र विशेष की ऐतिहासिक गरिमा में आभिवृद्धि होती रही है। यह अंचल आदिकाल में श्रृगी ऋषि, कंक ऋषि, मुचकुंद ऋषि, की तपोभूमि रहा है। बस्तर-कांकेर की संस्कृति में लिंगो संस्कृति की बड़ी व्यापकता है। बस्तर में लिंगो का तीर्थ स्थान सुमेर गाँव में है। बस्तरांचल में घोटुल मुरिया समाज में प्रचलित सांस्कृतिक संस्थान युवा गृह घोटूल की आराधना के केंद्र बिन्दु है-लिंगोपेन

बस्तर-कांकेर अंचल में मातृशक्ति सर्वमान्य है। मातृशक्ति के कई स्थानीय नाम है जैस-मावली कंकालिन, कोदई माता, परदेसिन माता, शीतला, भंडारिन माई, कोरमुड़िन, काढ्रिन देवी, एवं दन्तेश्वरी माई आदि।

बस्तरांचल की लोक संस्कृति में मड़ई मेलो का भी महत्वपूर्ण स्थान है। मेले, मड़ाईयों में देवी-देवताओं के प्रति श्रद्धा-भक्ति और मनौतियाँ अर्पित होती है। इस अंचल में मेले मड़ई एक दिवसीय, तीन दिवसीय और सात दिवसीय होते है।

बस्तरांचल में देवी-देवताओ को प्रसन्न करने के लिए त्यौहारों के अवसरो पर देवगुड़ियों में पशु-पक्षियों को बलि देने की प्रथा है। अंग्रजो के पूर्व बस्तर मे नरबलि की प्रथा प्रचलित थीं।

बस्तर-कांकेर की लोक परम्परा में मैत्री संकल्प का महत्वपुर्ण स्थान है। प्रथा के रुप में जन-जीवन में मैत्री भाव सुरक्षित है। गंगाजल, महापरसाद, मोगरा, चम्पा, गोंदा, केवरा, कनेर, दोनाफूल, जोगीलट और सातधार बदने के लिए मंदिर अथवा किसी का घर निश्चित किया जाता है। रथ-यात्रा पर्व पर गजामूंग बदते है। भोजली के अवसर पर भोजली, बाली परब पर बाली फूल, इन्द्रावती नदी की सात धार बहते है। महाप्रसाद तुलसीदल और गजामूंग प्रायः पुरुषों के बीच बदे जाते है। जब कि भोजली, केवरा, कनेर, गोन्दा, और चंपा स्त्रियो के बिच सखी बदने के काम आते है। गंगाजल, दोनाफूल और बालीफूल स्त्री और पुरुष दोनो में बदने की प्रथा है।

लोक जीवन में गायन, वादन और नृत्य का महम्वपुर्ण स्थान है। हल्बी परिवेश में लेजा, रीलो, मारी, रोसना, तथा भतरी में चइत-परब, कोटनी, झालियाना, तारा, हेरतागीतों की परम्परा प्रचलित है। लोक वाद्य भी काफी महत्व रखते है। नगाड़ा, तुड़बुड़ी, मोहरी, बस्तरांचल के प्रतिनिधि वाद्य माने जाते है। वाद्य में धनकुल ढुसिट, क्रिकरी, किरगिज और कुंजाड़ प्रमुख वाद्य होते है।

बस्तर-कांकेर अंचल के लोक साहित्य को दो भागों में विभक्त किये गये है। प्रथम पारम्परिक अलिख्सित द्वितीय अपारम्परिक, लिखित या

....शेष पृष्ठ 180 **पर...**

पर्यटकों को आकर्षित करता छत्तीसगढ़ का धमतरी जिला

छत्तीसगढ़ की पूजनीय नदियों में महानदी का अपना एक अलग स्थान है। पूरे भारत में ऐसा शायद ही कोई जिला होगा जहां चार बांध और बेहतरीन पर्यटन स्थल हो। गंगरेल में विश्राम गृह, खूबसूरत बगीचे, लग्जरी कॉटेज, नौकायन का आनंद और प्रकृति का खूबसूरत नजारा मन को मंत्रमुग्ध कर देता है। बांध के तट पर मां अंगारमोती मंदिर है जहां मेला लगता है, नवरात्रि में दीप प्रज्जवलित होते हैं।

-कान्हा कौशिक,
विद्युत मंडल (इस्टेबलिशमेंट विभाग), धमतरी -रायपुर, छत्तीसगढ़, मो.: 8815291090

छत्तीसगढ़ का धमतरी जिला पर्यटन के दृष्टिकोण से काफी महत्व रखता है। यहां महा नदी पर निर्मित गंगरेल बांध के अलावा माड़मसिल्ली, दुधावा और सोंढूर जलाशय को देखकर पर्यटक आनंदित होते हैं। वर्ष भर पर्यटकों का यहां आना जाना लगा रहता है और बरसात के मौसम का आनंद लेने दूर-दूर से लोग यहां विशेष रूप से पहुंचते हैं। छत्तीसगढ़ में अनेक नदियां पूजनीय मानी जाती हैं, इन नदियों में महानदी का अपना एक अलग स्थान है। हमारे प्रदेश के धमतरी जिले में महानदी का उद्गम स्थान है जहां एक ओर तीन बांध महानदी के पानी को सुरक्षित भी रखते हैं वहीं दूसरी ओर जलाशय का जल भी धमतरी जिले में ही है। पूरे भारत में ऐसा शायद ही होगा कि 1 जिले में चार बांध और सभी पर्यटन के लिए बेहतरीन स्थल हो। आइए जानें स्थलों के बारे में-गंगरेल-राजधानी रायपुर से 70 किलोमीटर दक्षिण पूर्व की ओर धमतरी शहर से मात्र 10 किलोमीटर दूरी पर स्थित गंगरेल बांध में महानदी का विशाल जल यहां भव्यता दर्शाता है। जर्मनी की एजलेस्टेम कंपनी की मशीनरी से सन् 1978 में इस बांध का निर्माण किया गया। बांध की ऊंचाई 47 मीटर है गंगरेल में 10 किलो वाट का विद्युत उत्पादन केंद्र है। पर्यटन क्षेत्र घोषित गंगरेल में विश्राम गृह, खूबसूरत बगीचे, लग्जरी कॉटेज की सुविधाएं हैं। यहां नौकायन का आनंद और प्रकृति का खूबसूरत नजारा मन को मंत्रमुग्ध कर देता है। बांध के तट पर मां अंगारमोती मंदिर है जहां मेला भरता है, नवरात्रि में दीप प्रज्वलित होते हैं। समीप में अंगार इको एडवेंचर कैंप है, यहां अहटो से आसानी से पहुंचा जा सकता है। गंगरेल से लगभग 5 किलोमीटर पहले रुद्री बैराज है जहां रुद्रेश्वर महादेव का प्राचीन मंदिर है। माघ पूर्णिमा में यहां विशाल मेला भरता है। बांध के सभी गेट कभी-कभी खोलते हैं। कुल मिलाकर गंगरेल बांध को देश का उत्तम पर्यटन स्थल माना जा सकता है। माड़मसिल्ली जिला मुख्यालय धमतरी से लगभग 27 किलोमीटर नगरी मार्ग पर स्थित यह साइफन पद्धति का विलक्षण बांध है। ग्राम बनरोद से दाएं ओर भोथापारा, दो मुरूमसिल्ली गांव से माड़मसिल्ली जलाशय पहुंचते हैं। महानदी का जल यहां संग्रहित होता है। बनरोद में लोक निर्माण विभाग का विश्राम गृह है जिसे पर्यटन विश्राम गृह के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है क्योंकि यहां से बाई ओर सोन्ढूर बांध के लिए रास्ता है। इस रास्ते पर चिकनी सड़कों के साथ वनों से आच्छादित दृश्य में शुद्ध हवाएं शरीर में ताजगी ला देती है। रास्ते में किनारे लगे लोहे में रेडियम रात में भी मशाल जैसा प्रतीत होता है। बांध के बीच एक टापू बना हुआ है। माड़मसिल्ली में सुंदर विश्रामगृह, मनोरम उद्यान, झरने, सुंदर पहाड़, मछुआरों की नाव पर्यटन के लिए श्रेष्ठ नजारा है। दुधावा बांध माड़म सिल्ली से मात्र 30 किलोमीटर दूर नरहरपुर से सरोना होते हुए दुधावा बांध पहुंचा जाता है। दुधावा का सफर सरल व आनंदित है यह बांध कांकेर जिला को छूता है। यहां पर कर्क ऋषि का तप स्थल रहा है। बांध के मध्य में प्राचीन शिव मंदिर था, शेष

पृष्ठ 34 पर........

छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा का अंतसंबंध

भारत में कुल 18 बोलियां है-जिनमें कौरवी, ब्रज, हरियाणवी, बुंदेली, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मारवाड़ी, मेवाती, मेवाड़ी, हाड़ौती, नेपाली, कुमाउंनी, गढ़वाली, मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि प्रमुख है। इनमें से कुछ बोलियों में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना हुई है जैसे ब्रजभाषा, अवधी प्रमुख है।

-डा. जयभारती चंद्राकर
सहायक प्राध्यापक, एससीईआरटी रायपुर, छत्तीसगढ़, मो०: 9424234098

हिंदी एक समृद्ध भाषा है। यह कई बोलियों की उद्गम स्थली भी मानी जाती है। हिंदी सभी देशवासियों को एक सूत्र में बांधने वाली भाषा है। यह व्यक्ति के साथ ही समाज को भी प्रभावित करती है। हिंदी भाषा हमारी

राष्ट्रभाषा है। हिंदी भाषा एक जीवित और सशक्त और समृद्ध भाषा है; इसने अनेक देशी और विदेशी शब्दों को अपनाया है।

हिंदी भाषा की अनेक बोलियां-उपभाषाएं हैं। भारत में कुल १८ बोलियां है-जिनमें कौरवी, ब्रज, हरियाणवी, बुंदेली, कन्नौजी, अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी, मारवाड़ी, मेवाती, मेवाड़ी, हाड़ौती, नेपाली, कुमाउंनी, गढ़वाली, मैथिली, मगही, भोजपुरी आदि प्रमुख है। इनमें से कुछ बोलियों में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना हुई है जैसे ब्रजभाषा, अवधी प्रमुख है।

हिंदी की बोलियां, उपभाषाएं हिंदी की विविधता है और हिंदी भाषा की शक्ति भी है; वह हिंदी की जड़ो को गहरा और मजबूत बनाती है।

हिंदी की पांच उप भाषाएं हैं-१. पश्चिमी हिंदी-कौरवी, ब्रज, हरियाणवी, बुंदेली, कन्नौजी, २.पूर्वी हिंदी-अवधी बघेली छत्तीसगढ़ी, ३.राजस्थानी-मारवाड़ी, मेवाती, मेवाड़ी, हाड़ौती, ४. पहाड़ी- नेपाली, कुमाउंनी, गढ़वाली, ५. बिहारी- मैथिली, मगही, भोजपुरी हिंदी के मुख्य दो भेद हैं-

१-पश्चिमी हिंदी-खड़ी बोली, हरियाणावी, ब्रज, कन्नौजी, बुंदेली
२-पूर्वी हिंदी-अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी

हिंदी के मुख्य भेद से ही छत्तीसगढ़ी और हिंदी का अन्तः सम्बध ा प्रारंभ हो जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषा पूर्वी हिंदी की एक शाखा है। इसकी लिपि देवनागरी तथा लिखित व्याकरण परिमार्जित एवं परिनिष्ठित है।

छत्तीसगढ़ी भाषा अत्यंत सरस प्रवाहमयी और लचीली होने के कारण ब्रज और बैसबाड़ी भाषा की तरह अत्यंत मधुर भी है। इसका शब्दकोष

अत्यंत विपुल तथा हाना (मुहावरा और लोकोक्ति) अत्यंत संपन्न है; जैसे-'चलनी म दुध दुहे, अउ करम ल दोस देय।' अर्थात गलत कार्य करके भाग्य को दोश देना। ये 'हाना' शिक्षाप्रद, सुझाव तथा लोक संस्कृति का ज्ञान कराते हैं; जैसे 'जइसे-जइसे घर दुवार, तइसे-तइसे फइका अउ जइसन-जइसन मा ई बाप, तइसन -तइसन लइका।' संक्षिप्ता इस भाषा की विशेषता है; जैसे मैं 'जा रहा हूं।' इस वाक्य के लिए 'जाथवं' कहना ही पर्याप्त है, इस शब्द में अर्थ बोध हो जाता है। इस 'जाथवं' शब्द में लिंग बंधन भी नहीं है।

छत्तीसगढ़ी भाषा में भावाभिव्यक्ति की क्षमता अधिक सशक्त है। शब्द चित्र उपस्थित हो जाता है; जैसे-'रूख तरी बिरबिट ले करिया किसना ल बांसुरी बजावत देख के मोहागे।' अर्थात अत्यंत काले कृष्ण को वृक्ष के नीचे बांसुरी बजाते देखकर सब मोहित होगए। 'रदरद-रदरद ले पानी गिरिस।' (जोर से पानी गिरना) 'हर्रस-हर्रस रेंगिस।' (जल्दी-जल्दी तेज गति से चलना।) 'खड़ोर-खड़ोर के लेगिस।' (खुरच-खुरच कर ले गया)आदि ऐसे कई शब्द छत्तीसगढ़ी साहित्य की धरोहर है जो हिंदी साहित्य के विकास में अपना योगदान दे रहे हैं।

छत्तीसगढ़ी भाषा छत्तीसगढ़ की अस्मिता है और छत्तीसगढ़ की पहचान है। छत्तीसगढ़ी भाषा छत्तीसगढ़ राज्य की राजभाषा है। यह हिंदी भाषा समूह की एक सदस्या है।

शेष पृष्ठ 34 पर......

महानदी बेसिन में कृषि का आधुनिकीकरण

जांजगीर चांपा के अंतर्गत शिवरीनारायण, महानदी, शिवनाथ नदी, जोक नदी का त्रिधारा संगम है। शिवरीनारायण जिला मुख्यालय से 50 कि.मी. दक्षिण की ओर हैं। हम शिवरीनारायण के तट से पूरे मैदानी क्षेत्रो का अध्ययन कर रहे है। जहां की भूमि में उच्चावच का समुचित समतलीकरण नही है तथा पारंपरिक कृषि के महत्व दिया जाता है।

-श्री सूर्यकांत भारद्वाज
शोधार्थी-भूगोल शास्त्र, बिलासपुर छ. ग.,
मो० 7987683411

महानदी बेसिन छत्तीसगढ़ गई है। जिसका परीक्षण हो चुका है तथा महानदी बेसिन में हम आधुनिक कृषि को महत्ता प्रदान करेंगे तब हम कृषि के क्षेत्र में अपार संभावनाओं को जन्म दे सकते हैं। सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं का लाभ लेकर के हम कृषि के आधुनिकीकरण कर के कृषि उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकते हैं। यहां की प्रमुख मिट्टीयॉ -कन्हार मिट्टी, मटासी मिट्टी, डोरसा मिट्टी, भाठा मिट्टी, कछारी मिट्टी महानदी बेसिन के तटीय भाग से मैदानी भागो में हम आधुनिक प्रक्रिया से कृषि कार्य करेंगे। तब किसानों के आय के साथ-साथ उनके अर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक रूप से विकास होगा। तथा कृषिगत फसलोत्पादन में वृद्धि होगा।

जांजगीर चांपा के अंतर्गत शिवरीनारायण, महानदी, शिवनाथ नदी, जोक नदी के त्रिधारा संगम है। यहां की कृषि उत्पादकता के आधुनिक तरीके से उपज को बढ़ाना हैं तथा फसल उत्पादन में वृद्धि करना है। शिवरीनारायण जिला मुख्यालय से 50 कि.मी. दक्षिण की ओर हैं। हम शिवरीनारायण के तट से पूरे मैदानी क्षेत्रो का अध्ययन कर रहे है। जहां की भूमि में उच्चावच का समुचित समतलीकरण नही है तथा पारंपरिक कृषि के महत्व दिया जाता है।

महानदी बेसिन में तथा शिवनारायण के क्षेत्रो में आज भी कृषि की प्रक्रिया परंपरागत है। हम आधुनिक यंत्र तथा पद्धति का उपयोग करेंगे। तब हम उन्नत उत्पादन कर सकते है।

कृषि में वर्तमान समय में बहुत सारे वाहन आ गये है। जिसकी मदद से कृषि की बोआई, सिंचाई, किटनाशक छिड़काव, कटाई, सफाई तक करने के लिए यत्रं आ गये हैं। जिसका उपयोग कर के किसानों के श्रम, रोजगार, तथा उत्पादन में इजाफा कर सकते है।

मिट्टियों की प्रकार्यता का अध्ययन कर के उचित उर्वरक का छिड़काव करना चाहिए। जैसे महानदी बेसिन के मिट्टी मे अम्ल की मात्रा मध्यम हैं तथा जो-जो तत्व कमी है उसके हिसाब से रासायनिक किटनाशकों का उपयोग किया जाना चाहिए।

ड्रिप सिंचाईः- सूखे और रूखे इलाको में जहां पानी की कमी है। ड्रिप सिंचाई फायदे मंद हैं। ड्रिप सिंचाई में पौधे तक बूंद-बूंद करके पानी पहुचाया जाता है। **फुहार सिंचाईः** इसमे बारिश की तरह फसलो में छिड़काव किया जाता है। **सतही सिंचाई** : बेसिन सिंचाई, वार्डर सिंचाई, कुंड सिंचाई।

वर्तमान में किसान परंपरागत बीज उपयोग करते है। जिसकी कीमत बाजार मे कम कीमत मिलती है। उन्नत बीजों के प्रयोग से फसल के उत्पादन में वृद्धि होगी तथा सही कीमत हमे बाजार से प्राप्त हो जाएगा।

एक फसल चक्रीकरण में भूमि का उपजाऊ पन कम हो जाता हैं। जिससे फसल का उत्पादन कम हो जाता है। वर्तमान समय में भूमि की उच्चावच को सुनियोजित करने ट्रैक्टर्स आ गये है। जो भूमि को समतल रूप प्रदान कर सकता है।

इस क्षेत्र में पर परंपरागत कृषि पद्धति के कारण भूमि का उपजाऊ पन कम हुआ है तथा किसान मिट्टी

परीक्षण कराने में रूचि नही लेते हैं। लेकिन वर्तमान समय में मिट्टी परीक्षण के दौरान अम्ल की मात्रा में बढ़होतरी हुई है। इसका कारण एक फसल चक्रण हैं मिश्रित फसल से भूमि का उपजाऊ पन बना रहता है। जैसे दलहन, और तिलहन से नाइट्रोजन, कैलशियम, फासफोरस, आयरन, जिंक जैसे महत्वपूर्ण तत्व मिल जाते है। अतः किसानों को खेतो में मिट्टी परीक्षण कराना चाहिए।

पशु चालित पटेला हैरोंः- पशु चालित पटेला हैरों लकड़ी का बना होता है जिसकी लंबाई 1.50मी० मोटाई 10सेमी. होती है। इसमें एक फ्रेम जुड़ा रहता है, जिसमें एक घुमावदान हुक बंधा रहता हैं। जो लिवर की सहायता से ऊपर नीचे किया जा सकता है। यह एक द्वितीय भूपरिष्करण यंत्र है, जिसकी सहायता से मिट्टी भुर भुरी करना, फसल के ठूठ को इक्कट्ठा करना तथा खरपत वार को मिट्टी से बाहर निकालना इत्यादि कार्य किये जाते है।

इसका फार छड़ फार प्रकार का होता हैं तथा यह उच्च कार्बन यह कम मिश्रित का स्टील बना होता हैं। इसकी जुताई गहराई का नियंत्रण हाइड्रोलिक लीवर से या ट्रैक्टर के थ्री प्वांइन्ट लिकेज से करते है। इस हल से सक्त से सक्त मिट्टी को भी असानी से तोड़ा जा सकता हैं। इस हल से देशी हल की तुलना में 40—50 प्रतिशत मजदूर की बचत, 30 प्रतिशत संचालन खर्च में बचत तथा 4—5 प्रतिशत उपज में बढ़ोतरी होती हैं।

डक फूट कल्टीवेटर एक आयता कार बाक्स की तरह होता है तथा इसके फार एवं स्वीच दोनो दृढ़ होते है, इसका कल्टीवेटर में फार से स्वीच बंधा रहता है। यह ट्रैक्टर चालित होता है तथा इसकी गहराई ट्रैक्टर के हाइड्रोलिक से नियंत्रित होती हैं। यह कल्टीवेटर काली मिट्टी के लिए ज्यादा उपयुक्त होती हैं। इस यंत्र से पशुचालित कल्टीवेटर की तुलना में 30 प्रतिशत मजदूर की बचत 35 प्रतिशत संचालन खर्च तथा 3—4 प्रतिशत में वृद्धि होती है।

इस हल में एक हरिस होता हैं। जो उच्च कार्बन स्टिल का बना होता है। हरिस उपर एवं निचे निकले हुए किनारे को सहयोग प्रदान करता है। यह खोखला स्टील का अडॉप्टर होता है। जो हैरिस के निचले भाग में लगा होता है। हल का प्रयोग गहरी जुताई के लिए किये जाता हैं। जिससे मिट्टी की जल धारण करने की क्षमता बढ़ती है।

इस हल में एक हरिस होता हैं। जो उच्च कार्बन स्टिल का बना होता है। हरिस उपर एवं नीचे निकले हुए किनारे को सहयाग प्रदान करता है। यह खोखला स्टील का अडॉप्टर होता है। जो हैरिस के निचले भाग में लगा होता है। हल का प्रयोग गहरी जुताई के लिए किया जाता हैं। जिससे मिट्टी की जल धारण करने की क्षमता बढ़ती है।

प्रायः इस यंत्र का प्रयोग खाद छिड़कने के लिए किया जाता है। लेकिन बीज छिड़कने के लिए इसका उपयोग कर सकते है। यह 25—30 अश्व शक्ति से चल सकता है। इसके बाक्स में 25—30 क्विंटल खाद या अनाज रखकर छिड़काव कर सकते है।

यह यंत्र शुष्क भूमि क्षेत्र के लिए ज्यादा उपयुक्त है। यह यंत्र कल्टीवेटर के ऊपर स्थित होता है और इस यंत्र में मुख्य रूप से बीज बाक्स, बीज नियंत्रण प्रणाली, पहिया, क्लच लीवर, एक शक्ति चालित प्रणाली होती हैं।

यह स्प्रेयर अधिकतर बडें खेतो में दवा छिड़कने के लिए कार्य में आता है। इसके प्रयोग से समय की बचत होती है तथा छिड़काव में खर्च कम आता हैं। यह मोटर से चलता है। इसमें मुख्य पिस्टन, प्रेशर गेज, प्रेशर रेगुलेटर, एयर चेम्बर, निकास नली, इत्यादि होता है।

इस यंत्र में डिगिंग ब्लेड, इलीवेटर शेकर, दो गेज व्हील, गेयर बाक्स इत्यादि होते है। यह यंत्र 35 अश्व शक्ति की ट्रैक्टर से संचालित होता है।

परंपरागत कृषि को छोड़कर आधुनिक कृषि पद्धति को अपनाने से कृषि उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ किसान कृषि के प्रति जागरूक होंगे और प्रशिक्षित होंगे।

भूमि की उर्वरक शक्ति को बढ़ाकर तथा उचित किटनाशको का प्रयोग कर फसलोत्पादन में वृद्धि कर सकते हैं।

किसान जब मिट्टी का परीक्षण करायेगें, तब मिट्टी की गुणवक्ता का ज्ञान होगा। उसके हिसाब से उचित उर्वरक का उपयोग करना सीख जायेगें।

सिंचाई के विभिन्न आयाम वर्तमान समय मे विद्यमान है तथा इस सिंचाई के नये तरीको का उपयोग कर के किसान फसल की उत्पादन क्षमता को बढ़ा सकता है तथा श्रम शक्ति लागत कम होगा।

सिंचाई व्यवस्था भूमि सुधार तकरीक उपयोग करने से उन्नत बीज का उत्पादन प्रायः सभी स्थानो में संभव हो जायेगा।

शेष पृष्ठ..36.. पर

लोक साहित्य

लोक साहित्य लोक की निधि है। इसमें लोक जीवन जैसी सरलतम व नैसर्गिक अनुभूति होती है। लोक साहित्य जो हमें विरासत के रूप में अपने पूर्वजों से मिले हैं उसका संचय अति आवश्यक है। लोक साहित्य के अध्ययन से आंचलिक विशेषताओं को जानने उसके संग्रहण, संरक्षण, संवर्द्धन के साथ अंचल में स्थापित करने तथा राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध करने हेतु इसकी भूमिका सर्वथा परिलक्षित होती है।

-डॉ० रीता यादव

सहा. प्राध्या. (हिंदी), शासकीय दाऊ कल्याण कला एवं वाणिज्य स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बलौदा बाजार, छत्तीसगढ़

लोक साहित्य में सभ्यता और संस्कृति के बीज मिलते हैं। मनुष्य के मन में चित्रित भावों ने जब गीत, गाथा, कथा और नाट्य का रूप लिया और इस रूप ने जब लेखनी प्राप्त की तब लोक साहित्य का उद्‌भव हुआ। लोक साहित्य शब्द अंग्रेजी के 'फोक लिटरेचर' का हिंदी अनुवाद है। लोक का सामान्य अर्थ समाज(संपूर्ण समाज) से हैं। 'लोकवाणी', लोकतंत्र, लोक कल्याण आदि शब्द संपूर्ण समाज का ही अर्थ देते हैं जबकि साहित्य शब्द का प्रयोग उसके प्रचलित सर्वग्राहय अर्थ में होता है। लोक साहित्य में प्रयुक्त 'लोक' शब्द अपने इस व्यापक अर्थ को त्याग समाज के शिक्षित, अशिक्षित या यूं कहें कि परिश्रमजीवी सामान्य समाज तक सीमित हो गया है। समाज का यह वर्ग सभ्यता के कृत्रिम आवरणों और धारणाओं से सर्वथा मुक्त स्वाभाविक जीवन जीता हुआ अपने हार्दिक भावों को अकृत्रिम रूप से सहज-सरल बोलचाल की भाषा में स्वच्छंद रूप से अभिव्यक्त करता रहता है। इसी से इन भावों की शब्दगत अभिव्यक्ति को लोक साहित्य कहा जाता है। लोक साहित्य का संबंध सीधे हृदय से जुड़ा रहता है। यह हृदय से उठता है और सीधे हृदय पर चोट करता है। लोक साहित्य में सृजित साहित्य की अपेक्षा सम्प्रेषणीयता की साधारणीकरण की शक्ति कई गुना अधिक होती है। डा. सत्येंद्र का लोक साहित्य की परिभाषा के संबंध में कथन अवलोकनीय हैं- 'वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी हो, पर आज जिसे सामान्य लोक समूह अपना ही मानता है और जिसमें लोक की युग-युगीन वाणी-साधना समाहित रहती है, जिसमें लोकमानस प्रतिबिंबित रहता है। इसी कारण जिसके किसी भी शब्द में रचना चौतन्य नहीं मिलता जिसका प्रत्येक शब्द, प्रत्येक स्वर प्रत्येक लय और प्रत्येक लहजा सहज ही लोक का अपना है और उसके लिए अत्यंत सहज और स्वाभाविक है।'

लोक साहित्य का भंडार विशाल एवं गहन है। हमें लोक साहित्य सांस्कृतिक विरासत के रूप में वाचिक परंपरा से प्राप्त हैं। लोक साहित्य लिपिबद्ध नहीं होता। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मौखिक रूप से हस्तांतरित होता है यह लोक जीवन की प्रकृति का स्पंदन है इसमें किसी तरह की कृत्रिमता नहीं होती। लोक साहित्य के संबंध में डा. कुंदन लाल का कथन दृष्टव्य है- 'आदिम मानव के मस्तिष्क की सीधी तथा सच्ची अभिव्यक्ति ही लोक साहित्य हैं। हमारे विचार में लोक साहित्य लोक समूह द्वारा स्वीकृत मौखिक क्रम से प्राप्त वह वाणी हैं जिसमें लोकमानस संग्रहित रहता है। लोक साहित्य में संस्कृति और परंपरा लोक जीवन के सुख-दुख हर्ष, उल्लास, मिलन, वियोग आदि की स्वच्छंद भावनाएं अपने नितांत स्वाभाविक रूप में अभिव्यक्त होती है।' लोक साहित्य भाषागत भिन्नता लिए होने पर भी संस्कृति एवं भावों की दृष्टि से अभिन्न रहा है। वस्तुतः लोक साहित्य लोक जीवन की धड़कन है। इसमें हमारी चिर प्राचीन संस्कृति, सभ्यता के अनेक रूप विद्यमान हैं। लोकभाषा के माध्यम से लोकचिंता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है लोक

जीवन की समस्त शक्ति लोक साहित्य में अभिव्यक्त होकर शिव और सुंदर बन जाती है। इस प्रकार लोक साहित्य लोक संस्कृति की अमूल्य संपदा है। किसी भी देश की सभ्यता, संस्कृति, धर्म, दर्शन, रीतिरिवाज, कला एवं सामाजिक आकांक्षाओं का साक्ष्य अवलोकन लोक साहित्य के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। लोक साहित्य में लोक जीवन की इच्छाएं कामनाएं प्रतिबिंबित होती हैं। मनुष्य जीवन से जुड़ी प्रत्येक भावना प्रेम, राग, विराग, घृणा आदि का स्पष्ट चित्रण लोक साहित्य में देखने को मिलता है। यह मनुष्य के जीवन मूल्य से जुड़ा हुआ है। इसमें प्रेम हैं, पीड़ा है, लालित्य है, आनंद है, रस है, इसलिए यह सजीव, प्राणवान, मधुर और नैसर्गिक है। डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक के संबंध में अपने विचारों को प्रकट करते हुए लिखा है कि 'लोक शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम्य नहीं है बल्कि नगरों और गांवों में फैली हुई वह समूची जनता से है जिनके व्यवहारिक ज्ञान का आधार पोथियाँ नहीं है ये लोग नगर में परिष्कृत, रुचि संपन्न तथा सुसंस्कृत समझे जाने वाले लोगों की अपेक्षा अधिक सरल और अकृत्रिम जीवन जीने के अभ्यस्त होते हैं और परिष्कृत रूचि वाले लोगों की समूची विलासिता और सुकुमारिता को जीवित रखने के लिए जो भी वस्तुएं आवश्यक होती है उनको उत्पन्न करते हैं।'

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो एक मौखिक परंपरा द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होता रहता है उसका संचय आज हमारी महती आवश्यकता है। इस साहित्य की रक्षा का भार नागरिकों, आम साहित्यकारों या रचनाकारों पर तो है ही साथ ही साथ शासन प्रशासन को भी इसके संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए ठोस प्रयास किया जाना चाहिए। जिससे युवा पीढ़ी लोक साहित्य के विभिन्न सोपानो, आयामों, अपनी संस्कृति परंपरा एवं मूल्यों से परिचित हो सकें।

बस्तर की लोक संस्कृति पृष्ठ 12 का शेष

आंचलिक। हल्बी भतरी लोकभाषाओं का लोक साहित्य भी सरस लोक गाथाओ लोक गीतों प्रेरक गाथाओ और लोकोत्रियों से भरा पड़ा है।

बस्तर रियासत में हल्बी राजभाषा रही किन्तु इसपर लेखन का अभाव रहा है। ठाकुर पुरन सिंह और गणेश प्रसाद ने हल्बी में लेखन व प्रकाशन का कार्य किया था। ठाकुर पुरन सिंह ने हल्बी भाषा बोध और गणेश प्रसाद सामंत ने देवी पाठ कि रचना की थी मेजर बेट्टी ने 1945 ई.में. हल्बी व्याकरण की रचना की थी। भतरी में पं. रघुनाथ महापात्र ने फुटला दसां बिलई ऊपर मूसा की रचना की थी। पं. वनमाली कृष्णादास ने भतरी में काव्य रचना की है।

बस्तरांचल के योद्धा गुड़ाघुट पर आधारित गुड़ाघट काव्य नाटक की रचना लक्ष्मीनारायण पयोधि ने की है। भतरानाट पौराणिक और धार्मिक प्रसंगो पर आधारित है। कांकेर अंचल में जनजातियों के बीच बोली जाने वाली बोलियों को मार्य और द्रविण, भाषिक परिवारों में बाटा गया है। हल्बाजाति की बोली हल्बी कहलाई। रियासत काल में हल्बी राजभाषा रही। राज मुरिया समाज में हलबी के साथ-साथ भतरी का भी उपयोग होता रहा है।

अन्ततः बस्तरांचल अपनी विशिष्ट संस्कृति के लिए विख्यात है। यहाँ की संस्कृति व बोली आकर्षक एवं आत्मीय संवेदना से भरा है। इसी आकर्षण से ही विदेशी जन यहाँ आने के लिए लालयित रहते है। बस्तरांचल अनेक संपदाव सौंदर्य का खजाना है। कि देखते ही बनता है। यहाँ के वनवासी का सरल स्वभाव, खान-पान, सभी आकर्षण का केन्द्र है। बस्तरांचल अपने आप में अनूठा है।

आवश्यक सूचना

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक 'विश्व स्नेह समाज' का जून-२०२२ का अंक कर्नाटक पर केन्द्रित होगा। जिसमें केवल कर्नाटक् के साहित्यकारों की रचनाएं होगी। इसमें कर्नाटक के प्रमुख स्थल, मुख्य जानकारियों के साथ ही साथ, विभिन्न विषयों पर लेख, कविताएं, कहानियां, लघु कथाएं, संस्मरण एवं व्यंग्य होगे।

व्यंग्य

भैंस की पुकार

ससूरी कोरोना बीमारी जाने कहां से आ गई, सबको हलाकान करके रख दिया है इसने। सब कुछ बंद है। रोज कमाने खाने वाले परेशान। काम ही नहीं हो रहा तो पैसे कहां से लाएं।

- सुश्री ममता अहार
द्वारा बाबा किराना स्टोर, लाखेनगर, हनुमान नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़-492013, मोः 9301586893

क्या आप लोगों ने मेरी बात को सुना? कैसे सुनेंगे आप लोग तो खुद अपने रिश्तेदारों की बातें नहीं सुनते हैं, तो मेरी पुकार भला कैसे सुनेंगे। हाय क्या बताऊं मैं किस परेशानी में पड़ गई हूं। अरे हमारा मालिक रोज पांच बजे दूध दुहने आता था, पर अब लॉक डाउन के कारण सुबह तीन बजे आ जाता है। दूध को सुबह छः बजे तक दुकानों तक पहुंचाना है क्योंकि सुबह आठ बजे दुकान बंद हो जाएगी और गांव से दूध शहर पहुंचाना पड़ता है, उसमें भी तो समय लगता है और मेरी तो सुनो। मैं अभी ठीक से सो भी नहीं पाई थी कि सुबह हो गई। चारा तक नहीं खा पाईं थी दूध कैसे आएगा और मालिक मुझे पीट -पीट के परेशान कर रहा है। लॉक डाउन ने मेरा जीवन बर्बाद कर दिया। हां अब इसमें मेरे मालिक कभी क्या दोष वो भी बिचारा पैसे नहीं कमाएगा तो मुझे क्या खिलाएगा। ससूरी कोरोना बीमारी जाने कहां से आ गई, सबको हलाकान करके रख दिया है इसमें। शहर बंद है दुकान बंद है सब कुछ बंद है रोज कमाने खाने वाले इधर परेशान। काम ही नहीं हो रहा तो पैसे कहां से लाएं, इधर जिसके पास पैसा है वह भी परेशान। खाने के लिए समान लाना चाहते हैं पर दुकानें बंद हैं, सबके सब परेशान। इधर काम वाली से मालकिन परेशान। कामवाली कह गई है अगर लॉक डाउन का पैसा काटा तो काम पर नहीं आएगी काम छोड़ देगी। मालकिन तो डर गई है अरे भाई ले जाना आकर अपने इस महीने का पैसा, पर जैसे ही लॉक डाउन खत्म होता है काम करने चली आना। लॉक डाउन आदमियों के लिए है हमें कौन रोक सकता है, हम तो वैसे भी सड़कों पर घूमते रहते है। मैं कल जा रही थी रास्ते में देखा एक आदमी को पुलिस दौड़ा रही थी वो साईकिल पर था उसने अपनी साइक्लि दौड़ाई और वो मुझसे टकरा गया उसकी साइकिल मेरी सींग में फंस गई। मैं डर कर दौड़ी और आगे दो दादा टाइप भैंसा लोग खड़े थे उनसे जा टकराई। उन भैंसों ने मुझे दौड़ा दिया और जाते-जाते मैंने सुना, एक भैंसा जो अलग से खड़ा था, वो क्या कह रहा था मालूम है? वो कह रहा था। अरे हम तो कब से तुम से टकराने की बाट जोह रहे हैं और तुम उनसे टकरा गई हाय मेरी फूटी किस्मत। मैं डर कर जो भागी सीधे मालिक के घर आकर रुकी।

अब इनकी सुनो कह रहे हैं आजकल ये भैंसे आदमी टाइप गोबर कर रही है बदबू भी कर रहा है। उस दिन गोबर बेचने गया था तो लेने से ही मना कर दिया। दुकानदार ने तो यहां तक कह दिया-अरे आदमी का गोबर ले आए हो क्या? कितना बदबू कर रहा है, ले जाओ इसे यहां सेकृ हम नहीं खरीदेंगे। अरे मूर्ख आदमी! अगर आदमी टाइप खाना खाएंगी तो गोबर भी आदमी टाइप ही होगा ना- बदबू भी करेगा। कल शादी में हलवाइ ने खाना ज्यादा बना दिया और आजकल लॉक डाउन के कारण शादी में दस लोगों को ही बुलाना है तो खाना बर्बाद हो गया तो हमें खिला दिया तो गोबर भी वैसा ही होगा ना।

बड़े मालिक की तबीयत ठीक नहीं है। बड़े मालिक अपने दोनों बेटों से कह रहे थे मैं अगर इस दुनिया से चला जाऊं तो तुम लोग भैंसों को बराबर-बराबर बांट लेना। पर.. मुझे उनके बड़े बेटे की हिस्से में नहीं जाना अरे वह बहुत मारता है हमें और तो और इंजेक्शन लगा के दूध निकालता है, नहीं... नहीं.. भगवान जी! बड़े मालिक को जल्दी ठीक कर दो फिर सब ठीक हो जाएगा।

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी साहित्य का अध्ययन

''सर्जनात्मक साहित्य में जो कुछ व्यर्थ है, उसे छांटते जाने की दृष्टि ही नयी कहानी की वास्तविक पहचान है। इसलिए नया शब्द न विशेषण है, न संज्ञा, वह मात्र उस प्रक्रिया का द्योतक है जो सतत् प्रवाहमान है।''

-डायमंड साहू (शोधार्थी)
हिन्दी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छ.ग.

स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी कहानी में भारतीय जीवन के यथार्थ और चेतना को 'नयी कहानी' के माध्यम से दर्शाया गया है। यह चेतना और यथार्थ लेखकों के अनुभवों से जुड़ी होने के कारण अनेक रूप-रंग धारण करती है। स्वातंत्रयोत्तर नयी कहानी सामूहिक रूप से अनुभूति के स्तर पर सामाजिक जीवन में परिवर्तन की पहचान है। नयी कहानी भोगे हुए यथार्थ और जीवन सत्य पर अधिक बल देती है।

नयी कहानीः नयी कहानी का प्रारंभ स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सन् 1950ई. में हुआ। परंतु उसे प्रतिष्ठा सन् 1956 ई. में भैरव प्रसाद गुप्त के संपादन में 'नयी कहानी' पत्रिका के प्रकाशन से मिली। नयी कहानी में पूर्ववर्ती कहानियों की तुलना में नए भाव बोध प्रकट करना ही इसका उद्देश्य है। नवीनता से आशय है ऐसे तत्वों पर गौरव जो किसी क्षेत्र में मानवता के मूल्यांकन व दृष्टि को ज्यादा परिवर्तित कर देने वाले हो। नयी कहानी के संदर्भ में कमलेश्वर का कथन है कि- ''सर्जनात्मक साहित्य में जो कुछ व्यर्थ है, उसे छांटते जाने की दृष्टि ही नयी कहानी की वास्तविक पहचान है। इसलिए नया शब्द न विश्लेषण है, न संज्ञा, वह मात्र उस प्रक्रिया का द्योतक है जो सतत् प्रवाहमान है।''[1] नयी कहानी मध्यवर्ग द्वारा भोगे गए यथार्थ को प्रामाणिकता और ईमानदारी से प्रस्तुत करती है। इन कहानियों में विभाजन का दर्द, सामाजिक जीवन की विसंगतियों, आर्थिक संघर्ष, सांस्कृतिक और राजनीतिक विद्रूप परिस्थितियों के बीच मनुष्य ने जिस अंतर्द्वन्द्व और पीड़ा झेला उसी के परिणामों की अभिव्यक्ति है। कहानीकार कमलेश्वर की 'दोपहर का भोजन', रविंद्र कालिया की 'इतवार का दिन', कमलेश्वर की 'खोई हुई दिशाएँ', राकेश की 'मलबे का मालिक', राजेंद्र यादव की 'छोटे-छोटे ताजमहल' और उषा प्रियंवदा की 'कोई नहीं', सोमवीरा की 'असली तस्वीर', उषा प्रियंवदा की 'अध्यापक' और लेखक गिरिराज किशोर की 'गाउन' आदि। भीष्म साहनी, हरिशंकर परसाई, मोहन राकेश, गजानन माधव मुक्तिबोध, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, मारकंडेय, अमरकांत, फणीश्वरनाथ रेणु, मन्नू भंडारी, शेखर जोशी, शिव प्रसाद सिंह, शैलेश मटियानी, कृष्णा सोबती, धर्मवीर भारती, निर्मल वर्मा, रामकुमार, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, श्रीकांत वर्मा और उषा प्रियंवदा आदि इस काल के उल्लेखनीय कहानीकार हैं।

अकहानी : 'अकहानी' के प्रवर्तक जगदीश चतुर्वेदी को माना जाता है। इस दौर की कहानियों में घोर व्यक्तिवाद, यथार्थवाद और उच्च श्रृंखल यौनवाद अधिक है। जीवन के समस्त मूल्यों, समाज की नैतिकता और समाज के प्रति लोगों के उत्तरदायित्वों से अपने को मुक्त मानकर यौन प्रवृत्तियों और कामुकता, काम संबंधों का उन्मुक्त चित्रण इन कहानीकारों ने किया है। 'अकहानी' के संदर्भ में कथाकार और समीक्षक बटरोही जी कहते हैं कि- ''आधुनिक युग में जो आंदोलन चले उनमें सर्वाधिक विवादस्पद अकहानी (एंटी स्टोरी) का आंदोलन था। किन्तु उसमें भी कहानी के मूल स्वरूप को छिपा दिया गया हो, ऐसा नहीं है। कहानी के मूल्यांकन मान संबंधी धारणाओं में परिवर्तन हुआ। लेकिन वह कहानी ही नहीं बनी रही। कहानी के अतिरिक्त कोई अन्य विधा नहीं हो गयी।''[2] इस अवधि की कहानियों में मणिमधुकर की 'कटघरे', मणिका मोहनी की 'एक मेरा दोस्त', श्रीकांत वर्मा की 'झाड़ी', प्रयाग शुक्ल की 'अकेली आकृतियाँ', विश्वेश्वर की 'दूसरी गुलामी', रवींद्र कालिया की 'एक डरी हुई औरत', 'नौ साल की छोटी पत्नी', गिरिराज किशोर की 'फ्राक वाला घोड़ा और निकट वाला साईस', श्रीकांत वर्मा की 'ट्यूमर', रमेश बख्शी की 'ईमानदार की कहानी' बहुत चर्चित रही।

सचेतन कहानी : सन् 1960 के बाद कहानी आंदोलनों में 'अकहानी' की प्रतिक्रिया स्वरूप 'सचेतन कहानी' विकसित हुई। सचेतन कहानी का प्रारंभ नवंबर 1964 ई. में प्रकाशित 'आधार' पत्रिका की 'सचेतन कहानी

विशेषांक' से माना जाता है। सचेतन कहानी के प्रवर्तक महीप सिंह है। महीप सिंह ने सचेतन कहानी को आधुनिकता की दृष्टि माना है। आधुनिकता निरंतर प्रगतिशील है और हमारे सक्रिय जीवन बोध पर निर्भर है। जीवन को जड़, निरर्थक अथवा गतिहीन मानने वाला व्यक्ति कभी भी भविष्य की ओर नहीं देख सकता है। इस काल के उल्लेखनीय कहानीकारों में महीप सिंह की कहानी 'कील', 'उजाले की उल्लू', 'घिराव', मनहर चौहान की कहानी 'बीस सुबहों के बाद', रामदरश मिश्र की कहानी 'एक वह', वेदशाही की कहानी 'दरार', शैलेश मटियानी की कहानी 'उसने नहीं कहा था', सुरेंद्र अरोड़ा की कहानी 'बर्फ', सुदर्शन चोपड़ा की कहानी 'सड़क दुर्घटना', आनंद प्रकाश जैन की कहानी 'आटे का सिपाही' आदि चर्चित हैं।

सहज कहानीः नई कहानी 'अकहानी' और 'सचेतन कहानी' की तरह 'सहज कहानी' कोई विशेष आंदोलन नहीं है, बल्कि छोटे से दायरे में सिमटा हुआ ऐसा आंदोलन है जिसका कोई घोषणा तंत्र नहीं है। 'नयी कहानी' पत्रिका के संपादक भैरव प्रसाद गुप्त, कमलेश्वर तथा भीष्म साहनी 'नयी कहानी' आंदोलन से जुड़े थे, किंतु सन् 1968 में 'नयी कहानियाँ' पत्रिका को अमृतराय ने खरीद लिया और 'सहज कहानी' पत्रिका की संपादकीय लिखने लगे, तब से यह एक नए आंदोलन के रूप में उभर कर आया। सहज कहानी के संदर्भ में अमृतराय कहते हैं कि- ''जिस कहानी में सहज कथारस नहीं है वह किसी दिन लोकप्रिय नहीं हो सकती और न साहित्य में स्थायी प्रतिष्ठा ही पा सकती है, क्योंकि व्यक्ति हर चीज से विद्रोह कर सकता है, हर चीज को छोड़ सकता है, अपने आंतरिक स्वभाव को नहीं।''[3] इन कहानीकारों में नासिरा शर्मा, विनोद, केशव कौशल, कमल गुप्ता, रजा जाफरी, रमेश बत्रा, हेमंत, भागीरथ और दामोदर खड़से प्रमुख हैं।

समांतर कहानी : हिन्दी कहानी आंदोलन में 1970 तक राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों के कारण बदलाव आते गया। सन् 1972 ई. के आसपास 'सारिका' में कमलेश्वर ने संपादकीय 'मेरा पन्ना' स्तंभ में एक नये कहानी आंदोलन 'समांतर कहानी' का सूत्रपात किया। 'समांतर कहानी' आम आदमी से जुड़ी हुई है। आम आदमी के दमघोटू वातावरण में रहने के कारण उनकी कम से कम आवश्यकताओं की पूर्ति का आधार लुप्त हो गया है तथा उनके संघर्ष को व्यक्त करते हुए कमजोर स्थलों को समांतर कहानी में दर्शाया गया है। इन कहानीकारों में जवाहर सिंह की 'गुस्से में आदमी', हिमांशु जोशी की 'जलते हुए डैने', आशीष सिन्हा की 'आदमी', अरुण मिश्र की 'अंधे कुएँ का रास्ता' आदि प्रमुख है। अन्य कहानीकारों में रमेश उपाध्याय, कामतानाथ, मधुकर सिंह, धर्मेंद्र गुप्त, इब्राहिम शरीफ, दामोदर, सदन, श्रवण कुमार, हिमांशु जोशी आदि उल्लेखनीय हैं। कहानी आंदोलनों में समांतर कहानी को व्यापक समर्थन और लोकप्रियता मिलने के बाद भी सन् 1978 ई. के पश्चात् यह आंदोलन समाप्त हो गया।

जनवादी कहानी : सन् 1970 के पश्चात हिन्दी कहानी आंदोलनों में जनवादी कहानियाँ सामने आयी। जनवादी कहानी आंदोलन प्रगतिवादी आंदोलन का आधुनिक संस्करण है। 'जनवादी कहानी' सातवें दशक के अंत में विशेष पहचान बनाती है परंतु वास्तविक उभार आठवें दशक में दिखाई देता है। इस कहानी आंदोलन में 'सर्वहारा वर्ग' केंद्र के रूप में उभर कर आता है। इन कहानियों के पात्र थके एवं हारे हुए न होकर जुझारू और संघर्षशील है। शोषित, उपेक्षित और पीड़ित पात्रों को फिर से कहानी में प्रतिष्ठित करने का श्रेय 'जनवादी कहानी' को जाता है। इन कहानीकारों की कहानियों में रमेश उपाध्याय की 'देवीसिंह', 'कल्पवृक्ष', 'कार्यक्रम के बाद', रमेश बत्रा की 'कल की रात', 'जिंदा होने के खिलाफ', स्वयं प्रकाश की 'आसमां कैसे-कैसे', 'सूरज कब निकलेगा', 'काली अंधेरी की मौत, हेतु भारद्वाज की 'सुबह-सुबह', 'अब यही होगा', उदय प्रकाश की 'मौसाजी', 'पुतला', राजेश जोशी की 'सोमवार', 'आलू की आँख', सुरेंद्र मेनन की 'षडयंत्र', 'खून की लकीर', धीरेंद्र अस्थाना की कहानी 'लोग हाशिए पर', 'सूरज लापता है' आदि उल्लेखनीय है।

सक्रिय कहानी : 'सक्रिय कहानी' आंदोलन का सूत्रपात सन् 1979 ई. में राकेश वत्स ने 'मंच पत्रिका' के संपादन में दो विशेषांक प्रकाशित किया, जिससे 'सक्रिय कहानी' की अवधारणा प्रस्तुत हुई। बाद में राकेश वत्स ने इन्हीं विशेषांको को 'सक्रिय कहानी की भूमिका' शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित कराया।

इस कहानी आंदोलन में शोषित एवं संघर्षशील व्यक्तियों की मानवता का चित्रण, व्यक्ति की बेबसी, स्वतंत्रता पश्चात समाज की स्थिति, परिवेश की क्रूरता और विसंगतियों का चित्रण सहजता से किया गया है। इस कहानी आंदोलन के प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में सुरेंद्र सुकुमार की 'उसका फैसला', रमेश बत्रा की 'जंगली जुगराफिया', कुमार संभव की 'आखिरी

मोड़', राकेश वत्स की 'काले पेड़', धीरेंद्र अस्थाना की 'लोग हाशिए पर' आदि प्रमुख है। इनके अलावा चित्रा मुद्गल, स्वदेश भारती, नवेन्दु, वीरेंद्र मेहंदीरता, विवेक निझावन आदि कहानीकारों का नाम उल्लेखनीय है।

अन्य कहानीकार : सातवें, आठवें दशक में जहाँ हिन्दी कहानी नित नये आंदोलनों से जुड़कर तथा विभिन्न परम्पराओं से बंधकर कहानियों का सृजन किया गया। वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसे भी लेखक हुए जो किसी आंदोलन विशेष से नहीं जुड़े। कुछ आंदोलनों से जुड़े हुए कहानीकार बाद में उनसे पृथक हो गये। ऐसे कथाकारों को उनकी विषयवस्तु और आत्मचेतना के आधार पर बांटा जा सकता है। इस वर्गीकरण में प्रथम वह वर्ग है जिन्होनें नगर व शहरों के उच्चवर्गीय समाज की विभिन्न प्रवृत्तियों का चित्रण किया है। इस वर्ग के कथाकारों ने शहरी सभ्यता, बाह्य आडम्बर, कृत्रिमता, प्रदर्शन, काम, सेक्स एवं यौनाचार का, नारी पुरूष के संबंध, दाम्पत्य एवं पारिवारिक जीवन की विषमताओं और समस्याओं का सामाजिक कठिनाइयों का मुखर चित्रण किया है। प्रमुख कहानीकारों में रमेश बक्शी, महेन्द्र भल्ला, सुदर्शन चोपड़ा, रवीन्द्र कालिया, गिरिराज किशोर, गंगाप्रसाद विमल, नरेश आदि।

दूसरे वर्ग में सामाजिक चेतना को बढ़ावा देने वाले कहानीकारों को स्थान दिया गया है। जिन्होनें ग्रामीण एवं शहरी जीवन का व्यापक रूप में चित्रण किया है। इन कहानीकारों ने गांवों व शहरों में व्याप्त विभिन्न विडम्बनाओं, विसंगतियों और विषमताओं का वर्णन, महानगरीय जीवन की महत्वकांक्षा, निम्नवर्ग एवं मध्यमवर्ग लोगों के जीवन की स्थितियों व प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक वर्णन, वर्तमान व्यवस्था से दुःखी, असहाय मानव की स्थिति उसकी संवेदना का चित्रण बहुत ही सहानुभूति व सहजतापूर्ण किया गया। इस वर्ग के प्रमुख कहानीकारों में अमरकांत, गोविंद मिश्र, रामकुमार, श्रवण कुमार, शानी आदि हैं।

आँचलिक संस्कृति को कहानी के माध्यम से चित्रित करने वाले कहानीकारों को तीसरे वर्ग में रखा जा सकता है। इस वर्ग में ग्राम्य जीवन, सभ्यता, संस्कृति, बदलते परिवेश, वातावरण का सूक्ष्म चित्रांकन, उपेक्षित वर्ग के लोगों के जीवन की समस्याओं का सजीव चित्रण कुशलतापूर्वक किया गया है। इस वर्ग के रचनाकारों में फणीश्वरनाथ रेणु, शिवप्रसाद सिंह, शैलेश मटियानी, मार्कण्डेय, राजेन्द्र अवस्थी, हिमांशु जोशी आदि हैं।

चौथे वर्ग में आधुनिक समाज और जीवन की विभिन्न पहलुओं को व्यंग्यात्मक शैली में उजागर करने वाले कहानीकार हैं। इस वर्ग के कहानीकारों ने आधुनिक जीवन पद्धित की विडम्बनाओं, विसंगतियों, शासन व्यवस्था, राजनीतिक भ्रष्टाचार, लाल फीताशाही तथा आपातकालीन स्थितियों का वर्णन व्यंग्यात्मक शैली को अपनाकर किया है। प्रमुख कहानीकारों में हरिशंकर परसाई, रवीन्द्र त्यागी, शरद जोशी, काशीनाथ आदि हैं।

पाँचवें वर्ग में महिला कहानीकारों को रखा गया है। जिन्होनें आधुनिक नारी को केन्द्र में रखकर उनकी पारिवारिक एवं सामाजिक परिस्थितियों, भूमिकाओं, नौकरी पेशा नारी की समस्याओं, पारिवारिक एवं दाम्पत्य जीवन का चित्रण किया है। साथ ही इन कहानीकारों ने एक सशक्त नारी का चरित्र उभारकर समाज के सामने प्रस्तुत किया है। प्रमुख कहानीकारों में शिवानी, सुधा अरोड़ा, कृष्णा अग्निहोत्री, मंजुल भगत, मृणाल पाण्डेय, मालती जोशी, मेहरून्निसा परवेज, कृष्णा सोबती, मृदुगा गर्ग आदि हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी कहानी में नयी कहानी से लेकर सक्रिय कहानी तक विभिन्न कहानी आंदोलनों का आगमन हुआ है। समकालीन अथवा साठोत्तरी कहानी ही अकहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी तथा जनवादी कहानी आदि नामों से पहचानी जाती है। इन कहानी आंदोलनों को अलग-अलग नामों से विभाजित किया गया है। परंतु कोई भी कहानी आंदोलन स्थायी समय के लिए नहीं रहा है तथा सभी कहानीकारों का उद्देश्य शोषित और पीड़ित जनता को कहानी का केंद्र बनाना है। आधुनिक कहानीकारों की कहानियों में युगीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का चित्रण किया गया है। नयी हिन्दी कहानियाँ विद्रोह और परिवर्तन का संदेश देती है। यह विद्रोह और आक्रोश का स्वर सभी कहानीकारों ने समाज की विसंगतियों को उजागर करने के साथ-साथ मनुष्य के प्रति अपनी आस्था, विश्वास और संवेदना को प्रकट करने के लिए किया है। इसी कारण समकालीन अथवा साठोत्तरी कहानियाँ मनुष्य के सबसे निकट है।

संदर्भ सूची -

01. कमलेश्वर, नयी कहानी की भूमिका, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली-1960, पृ. 49
02. बटरोही, कहानी की रचना प्रक्रिया और स्वरूप, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली-1977, पृ. 98
03. अमृतराय, आधुनिक भाव बोध की संज्ञा, हंस प्रकाशन, इलाहाबाद-1972, पृ. 93

लॉक डाउन में छोटी

हॉस्टल की सारी सहेलियां जो इंदौर के आस पास रहती थी, वे अपने-अपने बसेरे में चली गईं, परंतु मेरी छोटी बहन और उसकी सहेली उस हॉस्टल में रह गई, हॉस्टल की मेस ने पहले ही मना कर दिया, कि लॉकडाउन में कोई भी चीजें नहीं मिलेंगी तो तुम दोनों अपना खाना-पानी देख लेना।

-चिंकी यादव
पी.एच.डी. शोधार्थी-हिंदी, शासकीय दू.ब.महिला स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय रायपुर, छत्तीसगढ़, मो०: 9617092533

कोरोना महामारी का दहशत चारों ओर फैला हुआ है। आसपास में इतनी मौतें हो रही है, कि दिल दहल जाता है। पड़ोस में अधिकांश लोग कोरोना से ग्रस्त हैं। हमारे घर के पास में रहने वाले भैया की कोरोना से अचानक मृत्यु हो गई, हम सब मोहल्ले वासी बहुत सहमे हुए थे।

मां जब भी किसी की कोरोना से मौत की खबर सुनती बहुत ही घबरा जाती, पिता जी के गुजरने के बाद हम भाई बहनों ने मां को संभाला है। छोटी बहन ने बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से अपनी एम. फार्मा की पढ़ाई की।

जनवरी 2020 में उसका चयन फार्मा इंडस्ट्री में हुआ। वहां गर्ल्स हॉस्टल मिला, परंतु अपरिचितों के बीच सबसे पहचान बनाते हुए, उसने वहां अपने अच्छे दोस्त बनाएं, लेकिन घर में मां को हमेशा छोटी बहन की चिंता रहती थी, वही जब पता चला कि मार्च 2020 में लॉक डाउन लग रहा है परिस्थितियां पूरी विपरीत हो गई। हॉस्टल की सारी सहेलियां जो इंदौर के आस पास रहती थी, वे अपने-अपने बसेरे में चली गईं, परंतु मेरी छोटी बहन और उसकी सहेली उस हॉस्टल में रह गई, जैसे ही 21 मार्च के शाम को पता चला कि लॉकडाउन लगने वाला है, हॉस्टल की मेस ने पहले ही मना कर दिया, कि लॉकडाउन में कोई भी चीजें नहीं मिलेंगी तो तुम दोनों अपना खाना-पानी देख लेना। छोटी बहन बहुत परेशान हो गई अब क्या होगा! हम कैसे अपने लिए खाना एकत्रित करेंगे।

इधर घर में मां भी बहुत परेशान थीं, चिंतित थीं, कि छोटी बहन को इतनी दूर क्यों भेजा घर में वैसे भी सबसे छोटी और सबकी प्यारी है। मां की आंखों में आंसू था और उनको लगता कि किसी भी तरह से छोटी बस घर आ जाए।

इधर छोटी बहन इन दिक्कतों का सामना करते हुए और दोनों सहेलियां हाथ में हाथ धरकर कर्फ्यू के उस माहौल में अनाज लेने गई वही एक आदमी की जोरो से आवाज आई, 'घर चली जाओ, यहां कुछ नहीं है, अब इस पृथ्वी पर कुछ नहीं बचा, सब समाप्त हो जाओगे, ईश्वर का यह प्रकोप है, कोई नहीं बचेगा।' यह आवाज सुनकर दोनों सहेलियां सकपका गई, और अपने हॉस्टल को लौट आई। दोनों एक दूसरे को धैर्य रखने को कहती, अंदर से दोनों काफी डर गई थी।

तभी हॉस्टल के नीचे जो अम्मा रहती थी वो आई, और उन्हें अपने हाथों से सहला कर कहा तुम दोनों अकेली नहीं हो बेटा! 'मैंने अपने घर में भोजन बनाया है, आओ थोड़ा-थोड़ा खा लो। और अभी कुछ दिन मेरे पास रहो। तुम दोनों मेरी बेटियां जैसी हो।' दोनों को लगा जैसे देवी मां आकर स्वयं उन्हें अन्न दे रही हैं। उसके बाद जैसे भी इन दोनों ने अपना लॉकडाउन का समय गुजारा और फ्लाइट की टिकट जैसे ही मिली दोनों अपने घर गईं।

उस समय वे दोनों ऐसे महसूस कर रहीं थीं, जैसे मानो उनका पुनर्जन्म हुआ हो, अब वह अपनी मां और परिवार को मिल सकेंगी। फिर जब छोटी बहन घर पर आई, तो सबसे पहले मां को हृदय से लगा लिया और खूब रोई, और उसने घर पर सभी को बताया, कि इंदौर में 'मां अन्नपूर्णा देवी' का मंदिर है, जो बहुत प्रसिद्ध है और वहां सबकी मुरादे पूरी होती है।

इस प्रकार अन्नपूर्णा देवी मां की कृपा पूरे संसार पर बनी रहें तथा इस कोरोना महामारी जैसे प्रकोप से देवी मां पूरे विश्व को मुक्त करें। यही कामना हम सभी करते हैं। इस बार भी कोरोना का प्रकोप उच्च शिखर पर है परंतु हम सब खुश हैं, कि छोटी बहन हमारे साथ है।

रोचक इतिहास समेटे हुए है रायपुर का कंकाली माता मंदिर

कुछ मंदिर अपनी चमत्कारी शक्तियों के चलते आस्था का बड़ा केंद्र बने हुए हैं। इन्हीं में से एक मंदिर छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर के हृदय स्थल पुरानी बस्ती में स्थित है, कंकाली तालाब में बना यह कंकाली माता का मन्दिर अनेकों रोचक, रहस्यमय इतिहास को समेटे हुए है। मान्यतानुसार श्मशान घाट पर बने इस मंदिर का निर्माण नागा साधुओं द्वारा करीब 650 साल पहले किया गया था। इस मंदिर में एक शस्त्रागार है जो साल में एक ही दिन दशहरे के दिन खुलता है फिर शाम को साल भर के लिए बंद कर दिया जाता है।

-भारती यादव 'मेधा'
रायपुर, छत्तीसगढ़

आदिशक्ति माँ दुर्गा के कई ऐतिहासिक और प्राचीन मंदिर भारत के विभिन्न स्थानों पर हैं जिनकी अपनी कई मान्यताएँ, इतिहास और किवदंतियाँ हैं। कई मंदिरों के रहस्यों से आज तक पर्दा नहीं उठ पाया है और कुछ मंदिर अपनी चमत्कारी शक्तियों के चलते आस्था का बड़ा केंद्र बने हुए हैं। इन्हीं में से एक मंदिर छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर के हृदय स्थल पुरानी बस्ती में स्थित है, कंकाली तालाब में बना यह कंकाली माता का यह मन्दिर अनेकों रोचक, रहस्यमय इतिहास को समेटे हुए है। मान्यतानुसार श्मशान घाट पर बने इस मंदिर का निर्माण नागा साधुओं द्वारा करीब 650 साल पहले किया गया था। इस मंदिर में एक शस्त्रागार है जो साल में एक ही दिन दशहरे के दिन खुलता है फिर शाम को साल भर के लिए बंद कर दिया जाता है।

भारत में नागा साधुओं और अखाड़ा की दुनिया हमेशा से रहस्यमयी रही है। नागा साधुओं के तंत्र-मंत्र, इनकी सिद्धी और उपासना हमेशा रहस्यों से भरी हुई होती है। रायपुर के कंकाली माता मंदिर और कंकाली मठ का इतिहास भी नागा साधुओं की साधना से जुड़ा हुआ है। नागा साधुओं ने ही शमशान घाट पर देवी के इस मंदिर की स्थापना की थी। 13 वीं शताब्दी में दक्षिण भारत से कुछ नागा साधुओं की टोली यहां से गुजरी। तब इस जगह पर शमशान घाट हुआ करता था। मान्यता है कि नागा साधुओं ने अपने सिद्धि और तप के लिए 700 साल पहले आजाद चौक, ब्राह्मणपारा के समीप डेरा डालकर मठ की स्थापना की थी। वे मां कंकाली के परम भक्त थे। महंत कृपाल गिरी महाराज को मां कंकाली ने स्वप्न में दर्शन देकर कुछ ही दूर मंदिर निर्माण करने की आज्ञा दी। लगभग 650 साल पहले मंदिर का निर्माण पूरा हुआ और मठ से स्थानांतरित करके मां कंकाली की प्रतिमा मंदिर में प्रतिष्ठापित की गई।

इसके बाद नागा साधुओं ने सरोवर बनाने खुदाई की और बीच में मंदिर बनवाकर शिवलिंग की स्थापना की। नागा साधु पहले मां कंकाली और फिर शिवलिंग की विशेष पूजा-अर्चना करते थे। मान्यतानुसार एक दिन ऐसा चमत्कार हुआ कि देखते ही देखते सरोवर भर गया और मंदिर पूरी तरह से डूब गया। सदियों बाद भी मंदिर पानी में ही डूबा है। आज भी मां कंकाली की आरती के बाद पानी में डूबे शिवलिंग की आरती ऊपर ही ऊपर की जाती है। देश आजाद होने के बाद सबसे पहले 1965 में तालाब की सफाई करवाई गई, तब मोहल्ले के लोगों ने पत्थर के शिवलिंग का पहली बार दर्शन किए। तालाब फिर भर गया। इसके बाद 1975, 1999 और फिर 2013 में पुनः तालाब की सफाई की गई। इस तरह अब तक मात्र चार बार आसपास के हजारों लोगों ने शिवलिंग के दर्शन किए थे।

भीषण गर्मी में जब राजधानी के सभी तालाब सूखने लगते हैं, तब भी एकमात्र कंकाली तालाब लबालब भरा रहता है। जब तालाब के बीच बना 20 फुट ऊंचा मंदिर पूरी तरह से डूबा रहता है तो इससे तालाब की गहराई का अंदाजा लगाया जा सकता है कि कम से कम गहराई 30 फुट होगी।

माना जाता है कि प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा के दौरान महंत कृपालु जी महाराज को कंकाली देवी ने साक्षात कन्या के रूप में दर्शन दिए, लेकिन महंत जी उनको पहचान नहीं पाए और उनका उपहास करने लगे जिससे वो कन्या रुपी देवी एकदम से अदृश्य हो गई। तब महंत जी को अपनी गलती का अहसास हुआ और वर्तमान कंकाली मंदिर के बाजू में ही जीवित समाधि ले ली। ये जीवित समाधि आज भी यहां देख सकते हैं।

इस मंदिर का शस्त्रागार साल में केवल एक दिन दशहरे पर ही सुबह खुलता है। शाम होते ही ये शस्त्रागार फिर एक साल के लिए बंद हो जाता है। दशहरे के दिन इस मंदिर में दर्शन के लिए भक्तजन बड़ी संख्या में मौजूद रहते हैं और वे देवी मां के साथ-साथ अस्त्र-शस्त्र के भी दर्शन करते हैं। ऐसी मान्यता है कि जब भगवान राम और रावण के बीच युद्ध हो रहा था तब देवी मां युद्ध मैदान में प्रकट हुईं थीं और श्रीराम को शस्त्रों को सुसज्जित किया था।कहा जाता है कि जहां पर मां कंकाली की प्रतिमा मिली थी, उसी स्थान पर ये अस्त्र और शस्त्र निकले थे। वहीं यह भी कहा जाता है कि उस स्थान से इतने अस्त्र और शस्त्र निकलने के कारण ही वहां पर यह तालाब बन गया। ये तालाब मां कंकाली के मंदिर के ठीक सामने स्थित है। वहीं ये शस्त्रागार केवल दशहरा के दिन ही खुलता है। क्योंकि इसी दिन भगवान श्रीराम ने रावण का वध किया था।

कंकाली मंदिर को लेकर एक मान्यता ये भी है कि मंदिर के स्थान पर पहले शमशान था जिसकी वजह से दाह संस्कार के बाद हड्डियां कंकाली तालाब में डाल दी जाती थी। कंकाल से कंकाली तालाब का नामकरण हुआ। कंकाली तालाब में लोगों की गहरी आस्था है। ऐसी मान्यता है कि इस तालाब में स्नान करने मात्र से त्वचा संबंधी बीमारी से निजात मिल जाती है। कंकाली तालाब पर कई शोध भी हुए हैं। जिसमें ये कहा गया है कि शमशान होने की वजह से मृतक अस्थि कंकाल का विसर्जन तालाब में किया जाता था और यही वजह है कि हड्डी के फास्फोरस के अंश घुलने की वजह से इस तालाब में नहाने से चर्मरोग दूर होते हैं। श्रद्धालु पहले कंकाली तालाब में स्नान करते हैं। फिर इसी मंदिर में झाडू चढ़ाते हैं जिससे उन्हे चर्म रोग से मुक्ति मिलती है।

बताया जाता है कि कंकाली तालाब के भीतर सुरंग बनी हुई है। इस सुरंग के रास्ते से तालाब से दो-तीन किलोमीटर दूर महाराजबंध तालाब, नरैया तालाब और बूढ़ा तालाब तक पानी पहुंचता है। कुछ ही दूर प्रसिद्ध महामाया मंदिर की बावली भी कंकाली तालाब से ही जुड़ी हुई है।

नवरात्रि के दौरान यहां श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ती है। विशेष पूजा-अर्चना की जाती है। आज भी घर-घर में घट स्थापना के दौरान बोए जाने वाला जवारा और प्रज्ज्वलित ज्योति का विसर्जन रायपुर शहर के लोग कंकाली तालाब में ही करते हैं। तालाब में विसर्जन करने आने वाले मन्नतधारी श्रद्धालु अपने पूरे शरीर पर नुकीले सांग-बाणा धारण कर आते हैं और तालाब के पानी को शरीर पर छिड़कते हैं।

मंदिर में प्रवेश करते ही सबसे पहले भगवान भैरवनाथ के दर्शन होते हैं जो अस्त्र-शस्त्र के साथ देवी के गर्भगृह की रखवाली कर रहे हैं।

इस मंदिर की वास्तु कला में तांत्रिक पीठ होने के साक्ष्य मिलते हैं। गुंबद, मंडप, स्तंभ, गर्भगृह और ये पाषाण प्रतिमाएं ऐतिहासिक हैं। मंदिर के गर्भगृह की दीवारों पर गणेश, ब्रह्मा, विष्णु और शिव प्रतिमा स्थापित है। चूंकि इस मंदिर का निर्माण तांत्रिक पीठ के रूप में हुआ था इसलिए तंत्र मंत्र के साक्ष्य भी मंदिर में मौजूद हैं।मंदिर के दाहिने तरफ भगवान शिव का मंदिर है। वर्तमान में मंदिर में कई बदलाव हो चुके हैं लेकिन फिर भी यहां की वास्तुकला में 17वीं सदी के नजारे दिखाई देते हैं। इसीलिए कंकाली माता मंदिर धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि वास्तुकला की दृष्टि से भी अनुपम है। इसका भव्य द्वार बरबस ही दर्शकों का मन मोह लेता है।''

नाना संग सतभावां

(शैशव का संस्मरण)

गाँव का आलीशान बाड़ा। बाहर बड़ा खुला बैठक खाना जिसे 'बरवट' कहा जाता था! नानाजी 3 बजे रामायण बांचते। सस्वर दोहा चौपाई गाते व अर्थ कहते। पूरा गाँव श्रोता समूह होता। बैठकखाना के खुले बरामदे से लेकर बाहर आँगन से चौपाल तक भीड़ रहती। जब मैं जाती तो नाना मेरी मदद लेते।

-डॉ० सत्यभामा आडिल
वरिष्ठ साहित्यकार, एम.आई.जी.-5, सेक्टर-1, शंकरनगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

लोग याद करते हैं। नानी/दादी को। मैं किसे याद करूँ? मैंने नानी को देखा नहीं क्योंकि माँ की शादी के एक साल बाद ही नानी चल बसीं। 5 मामियाँ, 5 मामा व नाना थे। यही मेरा ननिहाल था। 2 बड़े मामा के बेटे-बेटियाँ तो मेरी माँ के समकालीन आयु की थीं और उनके बच्चे मेरी आयु के थे। बस छोटे 3 मामा के लड़के व लड़कियाँ मेरी उम्रदराज की थी। तो गर्मी की छुट्टियाँ बड़े मजे से कटतीं। नानाजी जब गए, तो मैं 7 वीं कक्षा में थी। हम जगदलपुर से दुर्ग आते थे, गर्मी की छुट्टियाँ मनाने!

गाँव का आलीशान बाड़ा। बाहर बड़ा खुला बैठक खाना जिसे 'बरवट' कहा जाता था! नानाजी 3 बजे रामायण बांचते। सस्वर दोहा चौपाई गाते व अर्थ कहते। पूरा गाँव श्रोता समूह होता। बैठकखाना के खुले बरामदे से लेकर बाहर आँगन से चौपाल तक भीड़ रहती। जब मैं जाती तो नाना मेरी मदद लेते। कैसे? मैं फूल पान, जल, अगरबत्ती, रामायण व पाटा जमाती। मेरा आनन्द बढ़ जाता। नाना की बहुत दुलारी नातिन थी मैं। घर के और किसी बच्चे को इसमें रुचि नहीं थी। सो मैं नाना की अकेली मित्र थी। 3 ममेरी बहनें व 2 भतीजियाँ भी थीं, पर उन्हें कोई रुचि नहीं। नाना का प्रवचन मेरे लिए बचपन से ही एक प्रकाशपुंज की तरह रहा।

मेरी रुचि ने ही मुझे नाना की लाड़ली बना दिया।

सुबह उठते ही हम चार लड़कियाँ (शांति, अहल्या, शशि और मैं) चौकड़ी भरते खेत व मैदान की ओर जाते, वहीं से तालाब जाकर नहा धोकर आते। उन दिनों घर पर शौचालय नहीं हुआ करता था, अतः मुंह अंधेरे ही उठ जाया करते थे। गीले कपड़े सुखाना, सूखे कपड़े पहनना, कंघी करना। तब तक मामियां कंडे जलाकर मोटी रोटी सेंक कर देती, जिसे हम घर में बने शुद्ध घी व गुड़ के साथ खाते। कभी कभी "बासी" भी खाते, प्याज व आम के अचार के साथ। दही भी मिलाते। यह सुबह का प्रिय नाश्ता होता था। फिर हम बाड़ी में आम तोड़ते। फ्रॉक में लपेटकर लाते, मामी चटनी पीसती खुश होकर। नाना का मुड़साल भी था। वहाँ एक घोड़ा व एक घोड़ी थी। नाना अक्सर मुझे घोड़ी पर बैठाकर पास के गाँव (नाम पन्हडोर) जाते थे, अपने भाई के घर। नाना के भाई का एक बेटा था जिसका एक पाँव छोटा था, तो मैं उन्हें 'खोरखा मामा' बोलती थी। वे भी अपने घोड़े में कभी-कभी हमारे गाँव आते थे, मेरी माँ व मुझसे मिलने।

गाँव पार करते बीच में 'महुआ' का जंगल था। महुआ की खुशबू से में मदमस्त हो जाती थी। नाना से बोलती 'नाना चलो पेड़ के नीचे बैठ जाएं।' पर, नाना नहीं मानते थे।

'कहते-अरे लौटने में देर होगी, तो दोपहर को "परेतिन" (प्रेतनी) रास्ता रोक लेगी। मैं डर जाती। दोनों गाँव की दूरी मात्र 2 किलोमीटर थी। लेकिन गाँव घूमने व घोड़ी में चढ़ने का आनन्द ही कुछ और था। कभी हम वहीं से खाना खाकर लौटते। कभी अपने गाँव आकर खाते।

इन छुट्टियों में खाने का अपना मजा था। मामियाँ रोज अमरस-रोटी खिलातीं। फिर दालभात के साथ दही वाली खट्टी सब्जी- जैसे कुम्हड़ा, भिंडी, मूली भटा, मसूर बटकर (कढ़ी), जिमीकन्द, खेड़हा आदि। ये सब दही में बनती हैं। इसमें आम की कैरी फांक भी डालते। ये सब गर्मी के

आइटम हैं। छत्तीसगढ़ में वैसे भी खट्टीसब्जी के प्रकार बहुत होते हैं। दाल की आवश्यकता नहीं होती।

खाना खाकर सब एक-दो घण्टे सो जाते। 3 बजे उठकर सब लोग सत्तू खाते। फिर मैं नाना के साथ रामायण में बैठती, बाकी लोगों का ग्रुप अलग हो जाता। 5बजे तक रामायण समाप्त। सारे लोग रामजी की आरती गाते और 'राम राम' का अभिवादन करते हुए घर जाते। मेरा काम रामायण समेटना होता। नाना को सब लोग प्रणाम करते, तो नाना उनको तांबे के लोटे में भरा तुलसी जल तीन तीन चम्मच उनकी हथेली में डालते, जिसे पीकर वे घर जाते।

रात में पंक्ति बद्ध होकर भोजन करने बैठते, तो 17 बच्चे-दो लाईन में बैठते। कांसे की बड़ी-बड़ी थालियाँ, कांसे के लोटे में पीने का पानी बाँई ओर-सनातनी नियम का पालन। थाली में हाथ नहीं धोते। भोजन करने बैठने से पहले हाथ-पैर धोना अनिवार्य।

नानाजी व दो बड़े मामा जी खड़ाऊँ पहनते थे। खट खट आवाज से पता चल जाता कि वे आ रहे हैं। बच्चों के बाद नाना, मामा, बड़े भैया लोग खाने बैठते, बाद में 5 मामियाँ व तीन भाभियाँ व तीन बड़ी दीदी लोगों की पारी आती खाने की! मेरी माँ व उनकी सबसे बड़ी बहन मामा लोगों के साथ खाने बैठतीं। इतना विशाल परिवार पूरे डेढ़ माह एक साथ रहते। रात्रि का आनन्द तो और भी गजब का। पूरे आँगन में 12 खटिया बिछाई जातीं। बाजू में दूसरा बाड़ा भी था। वहां भी 10—12 खाटें बिछाई जातीं।

अब हम जहाँ सोते, हमारी बड़ी माँ की भूमिका ही नानी की भूमिका होती थी। कैसे? बस वही तो हमें कहानी सुनाती थीं- आधी रात तक राजा रानी, सौदागर हीर परी, चित्ती डिब्बी, विक्रम वेताल, जादू की डिबिया ओह न जाने क्या क्या जादुई किस्सा!

तोता मैना, हीर रांझा, आल्हा ऊदल! ये सारी कहानियाँ डेढ़ माह तक चलने वाली धारावाहिक श्रृंखला थी जिसके मोहजाल में हम बंधे रहते थे। जब छुट्टियाँ खत्म होने के दिन आते, तो दिल रोने लगता।

हम डेढ़ माह नाना के घर, फिर एक सप्ताह के लिए पिताजी के गाँव भी जाना पड़ता था, चाचा-चाची व बड़ी दादी से मिलने। पर वहाँ का कोई आकर्षण नहीं था, क्योंकि मेरे दादा-दादी नहीं थे। बड़ी दादी कर्कशा थीं व चाचियों में भी आपसी सौमनस्य नहीं था। केवल पिताजी के भाइयों में आपसी प्रेम था, तो परिवार चल रहा था। बस एक सप्ताह के बाद हम जगदलपुर वापस चले जाते थे। मेरे हाई स्कूल पास होते तक ऐसा ही चला। पर 7वीं कक्षा में पढ़ते-पढ़ते नानाजी का स्वर्गवास हो गया। रामायण वाला प्रसंग छूट गया सदा के लिए! मेरी यादों में बस गए नाना! लेकिन हमारा बाकी मनोरंजन आगे जारी रहा। मैं कॉलेज में आ गयी तब भी बड़ी माँ कहानी सुनाती रही, उसी तरह।

मेरे बचपन में एक आनन्ददायक बात यह भी रही कि-मेरा नाम 'सतभावा' पुकारा जाता रहा। सत्यभामा-का- देशज रूप- 'सतभावां!' 'सतभावां'-पुकारा जाना मुझे सदा भाया! मेरे नाना पुकारते- 'सतभावांऽ

और मैं दौड़ती भागती चली आती, लिपट जाती उनसे। मामा-मामी बड़ी माँ पुकारती- "सतभावां"। मैं दौड़ती चली आती। मुझे बहुत अच्छा लगता यह देशज नाम 'सतभावां!'

तो ये संस्मरण मेरे नाना के घर पर गर्मी की बिताई छुट्टियों का!!

क्या आप लिखते हैं ?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर, 2. बिक्री की व्यवस्था 3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था, 4.विमोचन की व्यवस्था 5. ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

नवगीत

सूर्य दीप्ति आभा दमके

खूनी पंजे लालसाएं
कुचल देती दाह,
आज वेदी चढ़ती बाला
दबी सिसकी आह।।
सूर्य दीप्ति आभा दमके
स्वप्न-पथ बारात,
हिरणी भरती है कुलाचें
देख स्वर्ण प्रभात,
अंध-गंध मदमात यौवन
झूलती धर बाँह।।
छनछनाती नूपुर धुन खरी
बोल देते दाम
बेबसी का ज्वार बिकता
स्वप्न हो नीलाम
चरमराते है घरौदें
रौंद देते चाह।।

अर्थ महिमा बजता डंका
भेदता हर मान,
स्वांग बहरूपिया-सा लागे
कर छलावा आन,
नित्य रंगे काले आखर
वेदना तन स्याह।।
बुद्धि चलती उस डगर
क्रोध में है सुप्त सागर
भाप लहरों को अगर।
नापते पग सार जीवन
बुद्धि चलती उस डगर।।
सोंच भरते है सलोने
स्वप्न मखमल कल्पना
सारथी बन रास थामें
डोले नित प्रवंचना
वेदना संवेदना के
ताकते है पथ मगर।
आस आभा ज्ञान धारा
ओज जीवन में भरे
सीढियां पदचाप सुनती
मन भयातुर हो डरे
सीखना अरु तौलना ही
मानता मन का नगर।
जब नसे है फड़फड़ाती
दौड़ती रग बिजलियां
नैन चकवा चकोर भाँति
प्यास विरहन धमनियाँ
आस जीवन जगत धारा
रीतता जीवन गगर।

-डॉ मीता अग्रवाल 'मधुर'
रायपुर, छत्तीसगढ़

नशा मुक्ति

आज की शान हैं युवा
देश का अभिमान हैं युवा
पर वर्तमान समय में
युवा कर रहे हैं नशा....
नशा से बचाना है
नशा मुक्त भारत बनाना है।
जान ना किसी की जाने पाये
हम सबको मिलकर,
करना है प्रयास....
नशा की लत से
युवाओं को बचाना है
नशा मुक्त भारत बनाना है।
नशा से कितनों ने जान गवाई
किया घर बर्बाद
बच्चे, बड़े सभी हुए हैं
इस नशे का शिकार....
नशे से बचाने को करना
है जागरूकता अभियान।
गुटखा तंबाकू और शराब की
हर तरफ हो रही है
बिक्री खुलेआम
लोग समझ रहे हैं इसे
अपनी शान....
नशा छुड़ाना है
नशा मुक्त भारत बनाना है।
चरस गांजा और अफीम
देश में छाया है,
खोखला कर रहा हैं
देश को.......
गुमराह कर रहे युवाओं को
गुमराह से बचाना है
नशा मुक्त भारत बनाना है।

-डॉ० मुक्ता कान्हा कौशिक
रायपुर छत्तीसगढ़

आगंतुक ऐसा साल हो

आगंतुक ऐसा साल हो
जिसमें ना कोरोना काल हो
सबका जीवन सुरक्षित हों
सब स्वस्थ एवं खुशहाल हों
मजदूर किसान भी शान से जीयें
रोजी-रोटी का ना जंजाल हो!
सब मेहनतकश समृद्ध बनें
धन-वैभव मालामाल हों
व्यापारी ना लुटेरा बनें!
नेता, अधिकारी ना भ्रष्टाचारी हों!
कर्मचारी भी सद्कर्म करें
जनता भी सद् धर्म करें
बेरोज़गारों को रोजगार मिले
बेटी, नारी को सम्मान मिले
निर्भय होकर सब चल सकें!
ऐसा नैतिक चरित्र उत्थान हों

'सबका साथ-सबका विकास हो'
नीति निर्धारण खास हों
'स्वच्छ भारत-स्वस्थ भारत'
इस योजना पर विश्वास हों
लूट-खसोट बंद हों!
'ईमानदारी इंसानियत व्याप्त हों'
'राजनीति में ना कूटनीति हों!'
'देश सेवा ही लक्ष्य हों'
'सुख-शांति का हो वातावरण'
'देश सेवा, सद्भावना की मिसाल हो'
'आगंतुक ऐसा साल हो'
'परहित निस्वार्थ धर्म विस्तार हो'

-गया प्रसाद साहू 'रतनपुरिहा'
मुकाम व पोस्ट-करगी रोड कोटा जिला-बिलासपुर, छ.ग.

रिश्ते

रिश्ते हर पल साथ हैं रहते,
अलग-अलग रूप में सजते
कभी हंसाते, कभी रुलाते
रिश्ते हर पल साथ हैं रहते।
रिश्तो की डोर है कच्ची,
फिर भी वह कमजोर नहीं
रिश्ते तो रिश्ते हैं
निभने और निभाने के
रिश्ते हर पल साथ हैं रहते।
रिश्तो में दरार है आती,
फिर भी वह दीवार नहीं
उन्हें निभाना मुश्किल है
फिर भी वह नामुमकिन नहीं।
रिश्ते हर पल साथ हैं रहते।।
रिश्तो में है प्यार भरा,
प्यार कभी तकरार कभी
उनसे ही परिवार बना
परिवार बना संसार बना
रिश्ते हर पल साथ है रहते
रिश्ते हर पल साथ रहते।।

-डॉ० सरस्वती वर्मा
हिंदी विभागाध्यक्ष, शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय, महासमुंद, छत्तीसगढ

'जिदंगी एक सवाल'

चाहा क्या और क्या बना दिया
जिदंगी!
तेरे ही ख्यालों मे खोई
आखिर है क्या 'जिदंगी'?
हादसा है कोई,
या कोई कहर?
कोई बयार है जिदंगी!
एक कशिश है,
खौफ है
या दहशत है 'जिदंगी'?
करवटें बदलती रहती हूँ
इसी कशमकश में,
क्या चीज है जिदंगी?
कोई नयन ना नक्श
सिर्फ धुंधली तस्वीर है
जिदंगी!
हर गम, हर खुशी का खजाना,
एक अन्जाना सफर है,
जिदंगी!
पल में खुशी का पैंगाम,
पल में भूकंप सा विनाश
ढा देती है 'जिदंगी'!
है फिर भी सच्चाई,
एक अदृश्य परछाई,
सिर्फ अहसास है 'जिदंगी'।
सिर्फ अहसास है जिदंगी'।।

-श्रीमती निवेदिता वर्मा मेघा'
भाटापारा, जि-बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़

अनेकता में एकता का रंग

खिले एक फूल तो उससे कभी उपवन नहीं बनता
बहती एक नदी का रूप भी सागर नही बनता
झरे एक बूँद से बारिश कभी भी हो नहीं सकती
मिलें जब ये अनेक तो एकता का बल तभी बनता
ज्वाला एक चिंगारी का कभी न रूप बन सकता
अकेले एक स्वर से राग बोलो कैसे सज सकता
तारा एक अकेला आसमां रोशन नहीं करता
मिलें जब साथ सारे राग रोशन जग दमक सकता
अनेकों धर्म, भाषा जाति इनमें भेद कोई ना
भारतीय सभ्यता कहती परस्पर मान है रखना
जब आये बात भारत की सभी ये मिल से जाते हैं
है आदत शौर्य से दुश्मन सदा नीचे झुका रखना
रंगीला देश लगता इंद्रधनुषी रूप के जैसा
यहाँ सुख-दुख को कहते हैं छाँव और धूप के जैसा
फकीरी में भी देने का हुनर आता यहाँ सबको
प्रेम धरती का हर दिल में ईश के रूप के जैसा...

-भुवनेश्वरी जायसवाल
कोरबा, छत्तीसगढ़ मो0: 9174577531

संसार-समंदर

संसार के समंदर में ज़िन्दगी भर साँस चलती हैं,
ढल रही ज़िन्दगी संसार में किसकी आस करती हैं।
कैसे बताएं अनबोले इन अरमानों को,
सुख, दुख की झील में हर दिशा सिहरती हैं।

बनकर शिला दुखों की पल-पल आंसुओं को पीती हैं,
वेदनाओं की ज्वाला संसार-समंदर में धधकती हैं।
कैसे कहूं मतवाली इन धाराओं को,
जो समंदर को भरने के लिए सदा बरसती हैं।

साँसो की नाँव हार पल यूं गोते खाती हैं,
बिना पतवार वह भी समंदर में फँस जाती हैं।
कैसे समझाए मृदु चांदनी की धार को,
रात ढलते ही पल में विलुप्त हो जाती हैं।

रंगीन फूलों से धरती की मांग भी सजती हैं,
अम्बर से ओस की अशरफियां झरती हैं।
कैसे बताए बगियन की इन कलियों को,
एक हवा के झोंके से सारी पंखुड़ियाँ बिखर जाती हैं।

- **अर्चना पाण्डेय**
भिलाई नगर, दुर्ग, छत्तीसगढ

नई दुनिया

जनाब अब होंठ नहीं
उंगलियां बात करती हैं
कीबोर्ड पर तेजी से चलती अंगुलियां
लिखती हैं दिमाग की तेजी से
होंठों और कानों की जगह
उंगलियों और आंखों ने ले ली
आंखें नहीं पढ़ती अब आंखों की भाषा
पढ़ती हैं स्क्रीन के हाई रिजॉल्यूशन में जो आया है
सोशल मीडिया के माध्यम से
इस लिखने पढ़ने देखने में
तुम नहीं, मैं नहीं, बस है कोई तीसरा
जो खा रहा है हमारा समय
जिसने खत्म कर दी गर्माहट रिश्तों की
गर्म होते मोबाइल के चार्जर की फिक्र ही सबसे ज्यादा है अब
बच्चों का समय, परिवार का समय
खुद का समय
सब मिलेगा इसी मोबाइल के पेट में
और हां यह डकारता भी नहीं जनाब
आदिम युग में अपनी मूल आवश्यकताओं की पूर्ति में
हम बेहाल थे
और इस नई दुनिया में दूसरों की ज़िंदगी में
झांकने ताकने में खो दी हमने अपनी निजता
अपनी मर्यादा अपना आत्मज्ञान
सूचना की बहुलता में
प्रेम की न्यूनता है
चारों तरफ केवल खबर ही खबर
ह्रास होती करुणा और संवेदना
केवल बाज़ार और खरीददार हैं
यहां रिश्तों का मोल खो गया
खो गई पड़ोसी के साथ हमारी आत्मीयता
केवल सजगता का पाठ
केवल मनोरंजन की बात
यहां सत्य नहीं सत्य का दिखावा है
यहां मानवता नहीं समूहों में छलावा है
क्या संभव है लौटना उस युग में
जहां प्रेम हो, प्रत्यक्ष और यथार्थ में
जुड़े संबंध हो
इस आभासी दुनिया में अब जी नहीं लगता
फिर आपसी संवाद को
आत्मा व्याकुल है ।।

-डॉ. कल्पना मिश्रा,
सहायक प्राध्यापक हिंदी

नव दसरथ और श्रवण कुमार

दसरथ अब आखेट पर फिर गया।
मध्य रात्रि घनघोर तिमिर आकाश में
नक्षत्रों से प्रकाश की आस नहीं
वह केवल टिमटिमाते हैं।
उनके प्रकाश की न्यून राशि से
धरा में कुछ दिखता नहीं।
इधर आ गये मातृपितृ भक्त श्रवण कुमार।
जो अपने जन्मदाताओं को तीर्थ भ्रमण पर है।
पहुँचे नदी तट के समीप
यात्रा दीर्घ माता-पिता के साथ स्वयं भी प्यासे
पानी भरने सुखी तुमड़ी साथ रखें
जल राशि भरने लगे
रव-रव डब डब की
आहट सुन ताक पर बैठे दसरथ ने
अनुमानित लक्ष्य का संधान किया।
पर यह क्या उसे अचानक काल ज्ञान हुआ
युगों-युगों पूर्व घटित घटनाओं का संज्ञान हुआ।
किन्तु अब वह द्वन्द में है।
उसके अंदर आखेट का दंभ नहीं।
वह करुणा से भर गया है
अब वह धनुष रख देता है
वृहद दीप जलाता है।
उसे नदी के तट पर ऋषि कुमार दिखाई देते हैं।
उसे काल चक्र का संज्ञान होता है।
युगों पूर्व घटित घटनाएँ याद आती हैं।
वह श्रवण कुमार के चरण स्पर्श करता है।
बिना कुछ कहे दोनों हस्त संयुक्त कर
युगों पूर्व किए कृत्य की क्षमा मांगता है।
जल लेकर श्रवण के साथ उनके
माता-पिता के पास चलता है।
अपने तपोबल से उन्हें नेत्र और शक्ति प्रदान करता है।
अपने राजप्रसाद लेकर जाता है
किन्तु मुनि कुमार और उसके माता-पिता
विस्मय की मुद्रा में है। हतप्रभ
आश्चर्य में है साकेत में अत्यंत
आवभगत आतिथ्य सत्कार होता है।
कुलगुरु वशिष्ठ भी चकित है।
अजन्मे राम संशय में है।
क्योंकि यही वो लोग हैं जो पिता को श्राप देगे।
तभी तो होगा वनवास।
किन्तु याद आई मंथरा है अभी वह अकेले काफी है।
लीला तो होगी कोई नयी युक्ति प्रयुक्त होगी।
वह प्रसन्न है पिता श्राप से बच गए।
अजन्मे राम के समीप आए नारद मुसकाये
और कहा-त्रेता के महानायक राम ही होंगे।
राम अब अपनी भावी भूमिका को लेकर
संतुष्ट और प्रसन्न है।

-**श्री देवानंद बोरकर,** बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़

मेरा छत्तीसगढ़

ये मेरा छत्तीसगढ़ है, भारत की यह शान।
धान का कटोरा यह, है इसकी पहचान।।
वन सम्पदा से हरा-भरा, है यह प्रदेश।
खनिज धातुओं से भरपूर, देता यह संदेश।।
दया-भाव, शांति का रूप, है यहां के वासी।
मेहनत ही ईमान इसका, मेहनत ही मथुरा काशी।।
सीधे-सादे, भोले-भाले, है इनकी पहचान।
सत्य के पथ पर चलता सदा, बोल इनके ईमान।।
देवो की नगरी यह, अतिथियों का रक्खे मान।
यह छत्तीसगढ़ है, और यही इसकी पहचान।।
हाथ पसारे आए याचक, झोली भर-भर के जाए।
भूखा-प्यासा रहकर ये, औरों को सुख की नींद सुलाए।।
सुख की चाह नहीं इन्हें, दुःख को बिसरा जाए।
रुखा-सूखा खाकर, वसुंधरा की गोद में सो जाए।।

मधुर-मधुर बोली इनकी, मधुर-मधुर भाषा।
स्वस्थ, सुरक्षित रहे सब, यही इसकी अभिलाषा।।

- **हरिशंकर झारराय**
शोधार्थी हिंदी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ
मो०: 7999830218

(छत्तीसगढ़ी गीत)

मया के बंधना

मोला तैंहर कैसन संगी, अपन मया म बांधे ओ।
ठहर ठहर के जीव ल मोरे, सुरता अड़बड़ आते ओ।।
आवत जावत बैइठे मनखे, मनखे मन के बात हे।
भोभला बरोबार चाबत चना, दिल बिपरा बौरात हे।।
देखों निहिं जब तक तोला, रथिया कहां पहावे ओ।
मोला तैंहर कैसन संगी, अपन मया म बांधे ओ।।1।।
रेंगत कूदत हपटत फांदत, लेवत हों तोर नाम ओ।
संझा बिहीनीया तोर सपना, छूट गे जेन मोर काम ओ।।
खाना पीना सब्बो छूट गे, जबरन तिरत सांसे ओ।
मोला तैंहर कैसन संगी, अपन मया म बांधे ओ।।2।।
भाई ददा खिसयावत संगी, दाई ददा गरियावत हें।
अइसन दरस दिखा दे संगी, भक्तन मन जेन पावत हें।
सुग्घर सपना तोर संगमा, अंगना म खूंटा गाड़े ओ।
मोला तैंहर कैसन संगी, अपन मया म बांधे ओ।।3।।
पुन्नी के ते चंदा बरोबर, मे अंधियारी रात ओं।
गुरतुर लागे तोर बोली हर, पाके तोला इतरात हों।
भोंदू सोझवा टुरा मैहर, कैसन तोला पागें ओ।
मोला तैंहर कैसन संगी, अपन मया म बांधे ओ।।4।।

-लक्ष्मीकांत वैष्णव 'मनलाभ'
व्याख्याता(भौतिकी), जिला-जांजगीर चांपा, छ.ग.मो० : 7610306500

मना रहे हम अमृत महोत्सव आजादी का

मना रहे हम अमृत महोत्सव आजादी का।
सदियों के बाद चखा, स्वाद हमने आजादी का।।
है गर्व हमें, देखते-सुनते धारा विकास की।
बढ़ती आस्था सत्ता पर,देख अविरल धारा विश्वास की।।
15 अगस्त 47 को हमने देखी किरण, हम आजाद हुए।
चौक-चौराहों पर लहराये तिरंगा पूरी उम्मीद लिए।।
याद करें सदा-सर्वदा जिनने बलिदान किया।
देश के खातिर मर-मिटने को जिनने आह्वान किया।।
यह आजादी मिली हमें, पर रास्ते थे कई-कई।
इतिहास पुराना है, पर बातें अभी भी हैं नई-नई।।
त्याग, तपस्या, प्राणोत्सर्ग और देखा कालापानी।
वक्त लगा भले, पर चली नहीं अंग्रेजों की मनमानी।।
हम गुनगुनाते गीत अधरों पर, आजादी के।
प्राण न्योछावर कर गए वे, थे दीवाने आजादी के।।
नमन करते हर उस विभूति वह सेनानी को।
संकल्प लिए थे जो, मुक्त कराने भारत को।।
आओ, सब मिलकर गुणगान करें उनका।
यह देश हमारा है, इसे हम अर्पण करें तन का।।
उन्मुक्त लहरें सागर की, तट को भेदा करतीं।
सदा सुरक्षित है, हमारी यह भारत की धरती।।
अंतरिक्ष हो या हो जल या समुद्र विज्ञान।
हर क्षेत्र में स्थापित है भारत की पहचान।।
जल, थल और नभ की सेनाएं करतीं रखवाली।
हैं सुरक्षित हम सब, नमन उन्हें करते भारतवासी।।
उड़ें गगन में, पंख लगा के, चढ़ें पर्वत माला।
देश के खातिर तत्पर, हर संकट को है टाला।।
लहराये परचम भारत का विश्व योग दिवस माना।
बढ़ती साख निरंतर, भारत को है सबने जाना।।
विश्व बंधुत्व की धारणा अटल, परस्पर है विश्वास।
देश बने आत्मनिर्भर, सबका हो पूर्ण विकास।।
करें समीक्षा हम सब, अपने कर्तव्यों की।
बात नहीं केवल अधिकारों की व्याख्या की।।
हम सब मिलकर समर्पण भाव से, निष्ठा से।
कहते रहें, जय हिंद, जय हिंद, आपस में सबसे।।

यह गणतंत्र देश है, भारत हमारा।
अमृत महोत्सव है न्यारा न्यारा।।
घोषित हो, जय हो, जय हो की वाणी।
मिलकर बोलें सब, भारत के प्राणी।।

-राम मणि यादव,
रायपुर, छत्तीसगढ़

कविता

भारत की नारी
वेदो से बलिदानों तक जो होड़ लगी, खत्म ना ये बात हो।
वीर बालाओ ने बढ़कर सम्हाली देश की डोर नई।
ये डोर ना तंग हो, ये डोर भले बेरंग हो
हाथ मजबूत बना लो ऐ सखी
देखो नये दौर मे फिर से होड़ लगी
वेदों तक बलिदान तक जो होड़ लगी।
ये होड़ उन्नति का है ये होड़ उचाईयो को छुने का है।
बात कहूँ कल्पना चावला की या मै कहूँ वीरांगना लक्ष्मी बाई की
हो पुरानी गाथा या कोई नई बात हो
वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी
फिर वही शुरुआत हो, खत्म ना ये बात हो।
ये होड़ नयी दांव का है ये होड़ जीवन मे कुछ बदलाव का है
ऐ सखी याद कर उन वीरांगनाओं को जो देश मे आधी लाई थी
बनी देश की पहली मुखिया इंदिरा वो कहलाई थी
वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी
फिर वही शुरुआत हो, खत्म ना ये बात हो।
ये होड़ बुलंदियो का है ये होड़ कुछ नया करने का है
बहुत हो चुके ये जुल्म, ये सितम और ये अघात
बस अब निकल आओ ऐ सखी परदे से बाहर
देश को जगाना है कदम से कदम बढ़ाना है
वेदों से बलिदानों तक जो होड़ लगी,
फिर वही शुरुआत हो, खत्म ना ये बात हो।

-दीपिका दास
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, मैट्स विश्वविद्यालय
रायपुर छत्तीसगढ, मो०: 7987690771

वसुंधरा

सबसे प्यारी सबसे न्यारी
वसुंधरा यह हमारी
सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड में एकमात्र
अनुपम, अद्वितीय, अलौकिक सुकुमारी
जीवनदायिनी यह वसुंधरा हमारी
हिमाच्छादित धवल पताका धारी
कल-कल, झर-झर स्रोतस्विनी ध्वनि प्यारी
स्वर्ण शस्य आच्छादित हरियाली
अभिराम, अविराम व्योम फलक पर
विहग वृन्द मधुर कलरव गीत सुनाती
सबसे प्यारी सबसे न्यारी
वसुंधरा यह हमारी.....
वनस्पति की विविधता अचंभित करती
रंग-बिरंगे सुवासित प्रसून धरा महकाती
भांति भांति के थल, जल, नभ पशु-पक्षी
अपने जीवन की अनूठी कहानी बताती
अभिलाषा सदैव हृदय में यही रहती
पल्लवित, पुष्पित सुगंधित रहे वसुधा हमारी
सबसे प्यारी सबसे न्यारी
वसुंधरा यह हमारी
वसुंधरा पहचान हमारी
सुरक्षा हमारी नैतिक जिम्मेदारी
आओ मिलकर करें तैयारी
समृद्ध, स्वच्छ बनाने की अब हमारी बारी
प्राणों से भी हमको प्यारी
वसुंधरा यह हमारी
सबसे प्यारी सबसे न्यारी
वसुंधरा यह हमारी

-सुश्री नम्रता ध्रुव

सहायक प्राध्यापक हिंदी, शासकीय नवीन महाविद्यालय, नवागांव, सेक्टर-28, अटल नगर, नया रायपुर, छ.ग.

पर्यटकों को आकर्षित करता पृष्ठ 13 का शेष.........

मंदिर के डूबने के कारण इस मंदिर के शिवलिंग को देव खूंट ग्राम में लाया गया है। आश्रम में दृश्य बेहद लुभावना है। छोटी पहाड़ी में विश्राम गृह एक ओर तथा दूसरी ओर शिव मंदिर, सुंदर पहाड़, मछुआरों की नौका, गांव का दृश्य अति सुंदर है। अभी वर्तमान में दुधावा बांध को विशेष रूप से पर्यटन के लिए सजाया गया है। सोंढूर जलाशय वैसे तो धमतरी बनरोद से नगरी नगर पंचायत सांकरा होते हुए सोंढूर पहुंचा जा सकता है या फिर दुधावा बांध के भ्रमण के बाद फिर बिरगुड़ी सिहावा होते हुए भी सोंढूर पहुंच सकते हैं। यहां पर सोंढूर व लिलांज नदी बहती है। 1988 में बने बांध के विस्तार के लिए विभिन्न परियोजनाएं लागू की गई है। यहां स्थानीय टैक्सी से पहुंचा जा सकता है। समीप में मुचकुंद ऋषि का आश्रम मैचका गांव जलाशय से लगा हुआ है। सुरम्य वादियों, विशाल जल राशि व बगीचों से सुसज्जित विश्रामगृह पर्यटन का प्यारा स्थल है सोन्ढूर। संपूर्ण धमतरी जिले में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। बांध स्थल, उद्यान झूला, म्यूजिक सिस्टम, नौका आदि की व्यवस्था होने से मजा आता है। छत्तीसगढ़ की 41जलाशयों में प्रमुख 4 जलाशय धमतरी जिले में होने का गौरव प्राप्त है जिससे देश के पर्यटन मानचित्र में यह प्रमुख स्थान ले सकता है। आवासीय सुविधा-पर्यटन विभाग बरदीहा गंगरेल रेस्ट हाउस व धमतरी में विश्राम गृह सुविधा है। अन्य दर्शनीय स्थल में गंगरेल बांध के अलावा बिलाई माता मंदिर, अंगारमोती, श्रृंगी ऋषि सिहावा, सीता नदी अभ्यारण देवपुर में डोंगापथरा, रुद्रेश्वर मंदिर व रुद्री बैराज। पंहुच मार्ग रायपुर से 70 किलोमीटर रायपुर-जगदलपुर राष्ट्रीय राजमार्ग 30 पर 24 घंटे बस सेवा उपलब्ध है।

छत्तीसगढ़ी और हिंदी भाषा ..... पृष्ठ 14 का शेष....

छत्तीसगढ़ी भाषा का मानक रूप उत्तर में सरगुजा जिले से दक्षिण में दंतेवाड़ा जिले तक फैला राज्य 28 जिलों में बोली जाती है। जिसमें छत्तीसगढ़ी, लरिया, खलटाही, बस्तरिया, सरगुजिया, सदरी-कोरबा, बिंझावारी, कलंगा, भूलिया, बैगानी, कमारी आदि है।

छत्तीसगढ़ी की उपबोलियां भी है- हल्बी, गोंडी, भतरी, कुडुख़, मुंडा, धरुआ, बिरहोर, माडिया, संथाली, दोरली, हो इत्यादि है। छत्तीसगढ़ बोली की तीन दर्जन से अधिक भौगोलिक और सामाजिक रूप-उपरुप-नाम रूप प्रचलित है।

छत्तीसगढ़ी भाषा में विपुल लोक साहित्य और शिष्ट साहित्य विद्यमान है क्योंकि साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है। समाज में परिवर्तन होने के साथ-साथ साहित्य में भी परिवर्तन होते जाता है। दैनिक जीवन में व्यवहार के द्वारा समाचार पत्रों, साहित्यिक पत्रिका, पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा सिनेमा, इंटरनेट के माध्यम से छत्तीसगढ़ी भाषा का भरपूर प्रयोग तथा प्रचार-प्रसार हो रहा है। छत्तीसगढ़ी भाषा एक समृद्ध भाषा है इसने अनेक प्रचलित भाषा एवं अन्य बोलियों के व्यवहार में लाए हुए शब्दों को समावेश कर साहित्य को नया आयाम प्रदान किया है।

इस तरह छत्तीसगढ़ी और हिंदी एक ही परिवार की भाषाएं हैं इनमें अंतर संबंध है, कोई द्वंद नहीं है; क्योंकि छत्तीसगढ़ी के विकास से हिंदी मजबूत ही होगी और हिंदी भाषा समृद्ध और सशक्त होगी।

हिंदी और छत्तीसगढ़ी भाषा में मां-बेटी का रिश्ता है जो एक दूसरे की समृद्धि को और अधिक सशक्त बनाने में योगदान देंगी।

विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

मार्च २०२२ के आभासी आयोजन

1—06.03.2022, अपरान्ह 3 बजे, बाल संसद

2—15.03.2022, सायंकाल 7 बजे, **विषयः मोबाइल बच्चों के लिए कितना उपयोगी, कितना घातक**

3—20.03.2022, युवा संसद का आयोजन, सायंकाल 7 बजे।

4—30.03.2022, सायंकाल 7 बजे **विषयः प्रमुख राम भक्त कवि एवं रचनाकार**

कहानी

रेखा का लॉक डाऊन

-सुधा वर्मा,
रायपुर, छत्तीसगढ़

रेखा का पूरा परिवार घर पर है। कल 21 फरवरी थी 2020 की फरवरी। देश में कोरोना वायरस का प्रकोप रहा था। यह महामारी है जो चीन से निकल कर यात्रियों के साथ हवाई जहाज में बैठकर भारत तक आ पहुंचा है। जो भी उसके सम्पर्क में आयेगा वह भी उससे ग्रसित हो जायेगा। बाहर से आने वालों का तापमान जांच किया जा रहा है, जिसका तापमान अधिक है उसे आइसोलेशन में रखा जा रहा है।

यह फैले न करके गाँव, शहर, राज्य, देश में बंद की घोषणा हो गई। बस आटो, रेल सब कुछ बंद हो गया। रेखा अब घर पर ही है। उसके पति राजीव भी अब घर पर है। राजीव कालेज में प्रोफेसर हैं। स्कूल कालेज सब बंद है। राजीव और रेखा की एक बेटी है। जिसका नाम जूही है। वह सातवीं में पढ़ती है। राजीव के माँ पिताजी भी रहते हैं। रेखा भी स्कूल में पढ़ाती है। रेखा और राजीव सुबह दस बजे निकल जाते हैं। बिटिया जूही सुबह आठ बजे ही चली जाती है। दादा दादी अकेले रहते हैं। दो बजे जूही आती है तो दादी बहुत ही प्यार से खाना देती है और साथ में बैठे भी रहती है। दादा जी चार बजे जूही को दूध गर्म करके देते है और साथ में बिस्किट भी। जूही को कुछ पूछना होता है ओ दादा जी से पूछ लेती है। दादा जी हाई स्कूल में व्याख्याता थे अब रिटार्यड हो गये हैं। शाम तो दादा दादी और जूही घर के गार्डन में बैठ कर कुछ कुछ खेलते रहते हैं।

लाक डाऊन में सभी घर पर हैं। सुबह से दादा दादी नहा कर पूजा करते हैं और गार्डन में पेपर पढ़ते बैठ जाते हैं। यह उनकी रोज की दिनचर्या है। अभी बाई और माली भी छुट्टी पर हैं। राजीव सुबह से पेड़ पौधों में पानी डाल देता है। दादी सब्जी काट देती है। रेखा सुबह से झाड़ू पोछा कर लेती है। उसके बाद सब टेबल पर नाश्ते के लिये बैठ जाते है। रोज नाश्ता राजीव बनाता है। चौकोन पराठे के साथ दही, कभी पूड़ी और आचार खाते हैं। गुपचुप बना बना कर सबको पारी पारी से खिलाता है। कभी अपनी माँ के साथ छोले भटुरे बना लेता है। सुबह चौका रेखा अपने पति के लिये छोड़ देती है। नाश्ते के बाद सब ड्राइंगरुम में बैठ जाते हैं। रेखा खाना बनाकर सबके साथ आकर बैठ जाती है।

ऐसा तो शादी के बाद पहली बार साथ बैठने को मिल रहा है। घर में नौकरानी भी नहीं है। पापा अपने बचपन की बातें बताते तो दादा उसकी शैतानियों के बारे में बताते थे। दादी बताती है कि कैसे दादा जी उसे डांटते थे।

ऐसा तो शादी के बाद पहली बार साथ बैठने को मिल रहा है। घर में नौकरानी भी नहीं है। गेट का ताला भी नहीं खोलते हैं। डेढ़ दो घंटे सब बातें करते रहते हैं पर केंद्र में जूही ही रहती है। सब लोग उसके साथ स्कूल की बातें करते हैं, पढ़ाई की बातें करते हैं। पापा अपने बचपन की बातें बताते तो दादा उसकी शैतानियों के बारे में बताते थे। दादी बताती है कि कैसे दादा जी उसे डांटते थे। दादा जी का मुंह बनता तो जूही ताली बजा कर हंसती। सब लोग जूही को हंसते देखकर खुश होते थे।

खाना खाकर सब आराम करते फिर उठते तो दादी बढ़िया सी चाय पिलाती थी। राजीव नमकीन टोस्ट लेकर आता। सब लोग हंसी मजाक करते चाय नाश्ता करते फिर सब छत पर चले जाते थे। अब तो राजीव पतंग उड़ाते हुये जूही को उड़ाना सिखाता है। रोज रोज उड़ाते हुये अब जूही बहुत अच्छे से पतंग उड़ाने है।

रात को सब मिलकर खाना बनाते थे और प्यार से खाते थे। होटल का खाना और शाम का घूमना भूल चुके थे। जूही एक दो बार ही पिज्जा का नाम ली फिर वह भी भूल गई।

दादाजी ने एक दिन कहा की मैने अपने जीवन में कभी भी इतने फुरसत के छण नहीं देखे थे। यह कोरोना क्या बला है जिसने डर के साथ साथ परिवार को करीब ला दिया। सबके बीच का प्यार भी बढ़ गया है।वह याद कर रहे हैं राजीव कालेज में था तब से एक दिन घर में रह जाओ बोलने पर भी नहीं रुकता था।

पी.एच.डी किया तब भी रात दिन करता रहा। हमसे बात करने की फुरसत नहीं थी। जल्द ही नौकरी लग गई। समय बट गया। शादी हो गई तो जो थोड़ा सा समय हमारे लिये बचता था वह भी नहीं बचा। हम लोग खुश्र ही थे क्योंकि हम दोनों एक दूसरे को देख लेते थे। बहु भी नौकरी करने लगी तो घर का कुछ काम हमने बांट लिया। रेखा पैदा हो गई तो हम.लोगों को लगा की एक गुड़िया आ गई है। हम लोग उसके साथ खुश रहे। वह स्कूल जाने लगी तो लगा कि हम लोग फिर अकेले हो गये हैं। यह छुट्टी तो जैसे हमारे लिये वरदान लेकर आई है।

रेखा सोच रही है कि कितने सुनहरे दिन है हम सब साथ में हैं। राजीव और मैं बहुत दिनों के बाद इतने दिन साथ हैं। माँ पापा भी कितने खुश हैं। सब साथ ही बैठे रहते हैं।

राजीव सोच रहा है मैने अपने परिवार को पहिली बार इतना समय दिया है, सब कितने खुश हैं। रात को दादी जूही को कहानी सुना रही है। अचानक जूही बोलती है 'दादी सब लोग घर पर हैं तो कितना अच्छा लग रहा है। पापा भी पराठा छोले बना लेते हैं मुझे पता नहीं था। दादी पापा भी शैतानी करते थे तो अच्छा लगा। मुझे लग रहा था कि मैं ही शैतानी करती हूं। पापा कितनी बढ़िया पतंग उड़ाते हैं उन्होने मुझे भी सीखा दिया है। दादी मम्मी स्कूल जाती थी तो कितना थक जाती थी, अभी कितनी खुश है। दादी अब मैं मॉल भ नहीं जाऊंगी और होटल भी नहीं जाऊंगी। मुझे चाऊमीन और पिज्जा नहीं खाना है दादी। अबसे मैं आपका बनाया और मम्मी का बनाया नाश्ता ही खाऊंगी। अच्छा हुआ छुट्टी हो गई तो मुझे सब पता चल गया। मैं तो इस कोरोना को धन्यवाद देती हूं जिसने हम सबको घर पर दिया।' पीछे से राजीन ने आवाज दी 'चलो जूही सोना नही है क्या?' साथ में रेखा भी थी। रेखा ने कहा दादी से बहुत बातें हो रही है। दादी मुस्कुरा दी। जूही ने कहा 'कोरोना को धन्यवाद, माँ अब मुझे मॉल और होटल नहीं जाना है। मैं घर का बना ही खाऊंगी।'

महानदी बेसिन में कृषि .... पृष्ठ 16 का शेष......

उन्नत तकनीक का उपयोग करने से श्रम की बचत होगी। भूमि उपयोग सिंचाई व्यवस्था उन्नत बीज कीटनाशक उपयोग उन्नत तकनीक के प्रयोग से मिश्रित फसल बोने में सहायता मिलेगी।

छत्तीसगढ़ के महानदी बेसिन में कृषि की अनेक संभावनाएं विद्यमान महानदी बेसिन के शिवरीनायाण के क्षेत्र में जो परंपरागत कृषि की जाती है। हम उसके स्थान पर आधुनिक कृषि का उपयोग करना सिखेंगे तब हमारा कृषिगत विकास के साथ-साथ फसलों की उत्पादन क्षमता में इजाफा होगा। आधुनिक तकनीक का का उपयोग करने से किसान मजदूरी लागत कम होगी तथा किसान अपना सामाजिक तथा आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेच्क्ष में उन्नति कर सकते है तथा आधुनिक कृषि की महत्ता को समझने में आसानी होगी। इसके साथ शासन द्वारा चलाये जा रहें योजनाओं का लाभ लेना सीख जायेगें।

संदर्भ ग्रंथः- 1. कुमार प्रवीण 2007 में ''कृषि साख के माध यम से कृषि का आर्थिक विकास एवं समाजिक परिवर्तनः-एक अध्ययन, पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, छ.ग. अर्थशास्त्र विभाग, 2. गुप्त प्रदीप कुमार 2000 ''उ.प्र. में कृषि उत्पादों के मूल्य परिवर्तनों का कृषि उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन, राज बहादुर स्नातकोत्तर महाविद्यालय गुलालपुर, जौनपुर, उ.प्र. अर्थशास्त्र विभाग नां.स पीयू 88/39161, 3. चौरसिया प्रो. वी. के. 2001 ने लघु सिंचाई साधनों का कृषि उत्पादन रोजगार तथा आय पर पड़ने वाले प्रभावों का एक अनुशीलन (मध्य प्रदेश के रायपुर जिले के संदर्भ में) पं. रविशंकर विश्वविद्यालय रायपुर, छ.ग., 4. जायसवाल रितेश 2013 में "उत्तर प्रदेश मे कृषि उत्पादन की प्रवृत्तियों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन" डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद, उ.प्र., 5. डेहरे श्रीमती शकुंतला 2005 ''रायपुर नगर में जनसंख्या अप्रवासन एक अर्थिक विश्लेषण'' पं. रविशंकर वि.वि. रायपुर अर्थशास्त्र विषय 6. तिवारी आर. सी., सिंह बी.एन. 2013 कृषि भूगोल, 7. प्रसाद राम आधार 2002 ''वाराणसी जनपद में कृषि उपजों का विपणन'' वाणिज्य विभाग, वीर बहादुर सिंह पूर्वान्चल वि.वि. जौनपुर, उ.प्र, 8. मिश्र धीरेन्द्र कुमार ने 2002 में "बलिया जनपद में कृषि-परिस्थिति की दशाओं का आकलन एवं कृषि विकास का मापन'' वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ.प्र., 9. यादव केदार नाथ 2006 ''जनसंख्या वृद्धि एवं कृषि उत्पादकता नियोजन हमीरपूर जनपद का भौगोलिक अध्ययन'' बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी।

मोर गांव

यहां पपरेल नामक पेड़ पाया जाता था जो लकड़ी गीली रहने पर भी आराम से जलती है। यहां के तालाब का पानी छाछ के समान दिखता था जिसे 'कया' नामक फल से साफ किया जाकर पीने योग्य बनाया जाता था।

-रतिराम गढ़ेवाल, शोधार्थी,
हिंदी विभाग मैट्स विश्वविद्यालय, रायपुर
छत्तीसगढ, मो०:.9329826874

जन्मभूमि में हैं सकल सुख सुषमा समवेत।/अनुपम रत्न समेत हैं मानव रत्न निकेत।।

ग्राम पेन्ड्रीडीह, बिलासपुर रायपुर राष्ट्रीय मार्ग पर स्थित है। कई रहस्यों से युक्त एक ऐतिहासिक गांव है जहां भिलाई स्टील प्लांट की डोलोमाइट खदान है। यहां जमीन के अंदर और बाहर दोनों जगहों पर पत्थर मिलता है। यहां के निवासियों आपस में जबरदस्त एकता का भाव है, हर तीज त्यौहार को आपस में मिल जुलकर मनाते हैं। 50% सतनामी, 25%कतिया, 5% मुसलमान, 10% केंवट एवं 10% गोंड जाति के लोग इसके अलावा एक्का दूक्का अन्य समाज के लोग निवास करते हैं। मै खुद कतिया समाज से हूं जिनका पारंपरिक कार्य सूत कातना है। यहां के लोग लगभग 90% भिलाई स्टील प्लांट में कार्यरत हैं। लगभग 1300 सौ जनसंख्या वाले इस ग्राम में लगभग 650सौ मतदाता हैं। यहां प्रति वर्ष अखंड नवधा रामायण का पाठ नौ दिनों तक चलता है जिसका संचालन एक मुस्लिम समाज के बंधु द्वारा किया जाता है।

छत्तीसगढ़ तपोस्थली रही है। यहां कई ऋषि मुनियों ने तप साधना किए थे। ग्राम पेन्ड्रीडीह में एक सिद्ध मुनि बाबा का आश्रम है जिनका नाम कोई नही जानता परंतु शिला रूप में विद्यमान हैं, यहां भक्तों द्वारा एक कुटिया बना दी गई है। जब डोलोमाइट खदान प्रारंभ हुई तो उसे हटाने के लिए भिलाई स्टील प्रबंधन ने खूब एड़ी-चोटी का जोर लगाया। इस दौरान कई आधुनिक मशीनें खराब हो गई परंतु बाबा जी को नहीं हटा पाए, आज बीच खदान में विद्यमान हैं। जब मैं 10—12 बारह वर्ष का था तो मैं और मेरे पिताजी राशन लेने खदान द्वारा खोली गई सोसायटी में जाना था, परंतु मेरे पिताजी रूपये खदान मे जहां वे काम करते थे भूल गये थे। उस समय पर्स का चलन नहीं था। बांस के बनाए हुए पर्स का चलन रहता था। हम लोग खदान से होते हुए सोसायटी जाने लगे जैसे ही खदान पहुंचे अचानक ब्लास्टींग चालू हो गई। जहाँ देखो वहाँ पत्थर की बरसात होने लगी, मेरे पिताजी ने मुझे अपने आगोश में लेकर सिद्ध मुनि बाबा का सुमिरन करने लगे हम मौत के सामने खड़े थे चारों ओर पत्थर की बारिस हो रहा थी। मेरे पिताजी रो रहे थे उनकी स्थिति मैं बयाँ नहीं कर सकता, हमारे बचने का कोई अवसर नहीं था परंतु सिद्ध मुनी बाबा की कृपा से एक भी पत्थर हमें छू भी नही पाया था। जब मैं उस घटना को याद करता हूं तो सिहर सा जाता हूं जैसे भादों में पानी गिरता है वैसे ही ब्लास्टींग होने पर पत्थरों की बारिश होती है। एक घंटे के पश्चात जब ब्लास्टींग खत्म हो गई थी तब मेरे पिताजी उठ नहीं पा रहे थे। कुछ समय पश्चात जब ब्लास्टींग कर्मचारी आए तब वे हमारी हालत देखकर हमें घर तक छोड़ने गए। सभी आश्चर्य चकित थे कि हम सुरक्षित हैं और हमें खरोंच तक नही आई थी। कुछ दिनों तक हम चर्चा का विषय रहे। मेरे पिताजी पर कुछ विभागीय कार्यवाही भी हो सकती थी परंतु माईन्स मैनेजर ने ऐसा कुछ नहीं होने दिया। खदान में हर रविवार को सुबह 9बजे एक घंटा तक हैवी ब्लास्टींग होती है जिसकी सूचना सायरन के माध्यम से दी जाती है। दो सायरन चालू होने के पूर्व एवं दो सायरन बंद होने के बाद। मेरे पिताजी से चूक हो गई थी।वे समझ बैठे थे कि ब्लास्टींग बंद हो गई है जबकि वे खुद उस काम का हिस्सा रहते थे।

एक किंवदंती भी है कि एक बार बारात विवाह करके लौट रही थी एवं सिद्ध मुनि बाबा की कुटिया के

पास रूकी थी। बाबा की कुटिया के आस-पास बहुत सारे पत्थर हैं जो कि उनके चेले ही हैं। कुछ सरारती बरातियों द्वारा वहाँ बाबा जी का अपमान कर दिया गया, बाद में बाबा जी के प्रकोप से कुछ ही दूरी पर हमारे गांव के समीप ही सभी बराती गाड़ी-बैल सहीत पत्थर हो गए जो आज भी विद्यमान है।

यहां के रीति रिवाज : छः दिन में छठ्ठी कार्यक्रम, बारह दिन में बरही (इसमें बारह दिनों बाद महिला को घाट पूजा कर नहाने का रिवाज है), विवाह पांच दिनों का होता है। अपनी शक्ति अनुसार कर सकते हैं।

अंतिम संस्कार के लिए पूरे गांव से लकड़ी कंडे की व्यवस्था की जाती है।पूरे नव दिनों तक शोकाकुल परिवार को समाजिक बंधुओ द्वारा भोजन की व्यवस्था की जाती है। दसगात्र का कार्यक्रम शोकाकुल परिवार के द्वारा सामर्थ अनुसार किया जाता है। किसी कार्यक्रम को करने के पहले समाज की बैठक बुलाकर समाज को बताया जाता है एवं जो भी सहयोग की जरूरत होती है समाज द्वारा किया जाता है। समाज में जरूरत के जरूरी सामान जैसे बर्तन, चूल्हा, दरी आदि उपलब्ध हैं।

यहां पपरेल नामक पेड़ पाया जाता था जो लकड़ी गीली रहने पर भी आराम से जलती है। यहां के तलाब का पानी छाछ के समान दिखता था जिसे 'कया' नामक फल से साफ किया जाकर पीने योग्य बनाया जाता था।

यहां कुछ लोगो के द्वारा हाड सिंगारी की दवा दी जाती है जो पूरे छत्तीसगढ़ में प्रसिद्ध है।

फार्म 4 नियम 8

1. पत्रिका का नाम	: विश्व स्नेह समाज
2. प्रकाशन स्थल	: एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद -211011, उ.प्र.
3. प्रकाशन की अवधि	: मासिक
4. मुद्रक का नाम	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
(क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	: भारतीय
5. प्रकाशक का नाम	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
(क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	: भारतीय
पता	: एल.आई.जी-६३, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद -211011, उ.प्र.
6. सम्पादक का नाम	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
(क्या भारत के नागरिक हैं यदि विदेशी हैं तो मूल देश)	: भारतीय
पता	: एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद -211011, उ.प्र.
7. स्वामित्व	: गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: एल.आई.जी-93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद- 211011, उ.प्र.

मैं गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

तारिखः 15.02.2022 गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

बूढ़ा बरगद

लेखिकाः सरला शर्मा
छत्तीसगढ़

हमेशा की तरह बिसनी का स्वगत कथन शुरू हो गया है- "फल के न फूल के बर्रो अलग से, घर के आंगन में कोई इतना बड़ा पेड़ रखता है, बारहों महीना पत्ते झड़ते रहते हैं कचरा ही कचरा...ऊंह..पहले चबूतरा झाड़ो फिर आंगन..झाड़ू लगाते लगाते कमर, पीठ दुखने लगती है।"

मुस्कुरा दी मैं। ठीक कह रही है बिसनी। बूढ़े बरगद ने भी ताली बजाई, कुछ और पत्ते आंगन के फर्श पर बिखर गये।

बिसनी को आज तक समझा नहीं पाई कि पेड़ पौधे भी हमारे हितैशी मित्र, रिश्तेदार से कम नहीं होते यही देखिये न...मैं उम्रदराज, अवकाश प्राप्त महिला जब भी किसी समस्या से परेशान होती हूँ या कुछ लिखना, पढ़ना होता है इस बरगद के घने छांव में बैठ जाती हूँ। सुबह की चाय और अख़बार हाथ में लेकर सीधे चबूतरे पर आ बिराजती हूं कमरे में बैठकर अख़बार पढ़ना नहीं सुहाता। पेड़ की ठंडी, घनी छाया में सर्दी, गर्मी की सुबह और भी सुहानी लगती है तो बरसात में मेघला आकाश, गीली हवा तनमन सिहरा देती है अवकाश ग्रहण करने के बाद जब इस घर में रहने की बात आई तो बेटों ने क हाथा "आंगन घेरकर खड़े इस बूढ़े बरगद को कटवा देते है, दो कमरे और बन जायेंगे जिसमें कोई किरायेदार रख लेना, अकेली रहेंगी तो किराएदारों का साथ रहेगा।" पेड़ कटवा दूं, कैसे? इसके साथ तो सिर्फ मेरी नहीं मेरे अपनों की भी यादें जुड़ी हुई हैं तीन पीढ़ियों के सुख-दुख का मौन साक्षी है यह पेड़। मुझे याद है दादी ने बताया था...माँ, बाबूजी की शादी हुई ही थी कि वट सावित्री व्रत का दिन आया। जेठ काम हीना, तपती दोपहरी में महिलाएँ तालाब किनारे

बाबूजी ने कहा "बरगद दीर्घ जीवी पेड़ होता है, पत्ते बड़े बड़े होने से छाया भी घनी होती है, आंगन में खड़ा पेड़ शुद्ध हवा भी देगा उस समय तो लोगों को यह समझाना कठिन था कि बरगद कार्बन डाई ऑक्साइड का शोषण कर प्राण वायु ऑक्सीजन देने में अधिक समर्थ होता है।

वटपूजा के लिए गई, मां भी साथ गई। हमारी मां शहर में पली, बढ़ी थी नगें पैर चलने का अभ्यास नहीं था तिस पर गांव के रिवाज़ के अनुसार घूंघट। पर पूजा करने तो जाना ही था। पूजा कर के घर लौटी तो बाबूजी ने देखा पांव में छाले पड़ गये हैं तब तो चुप रहे। बरसात शुरू ही हुई थी कि बाबूजी बड़का छोटा सा पौधा लेकर आये आंगन में रोपने के लिए। बहस छिड़ गई दादाजी ने आपत्ति की बरगद का पेड़ बहुत बड़ा होता है इसकी जड़ें भी दूर तक फैलती हैं तो दीवारों को कमजोर कर देती हैं।

"दादी का अपना मत था" बड़ा आंगन है कोई पेड़ हील गाना है तो आम का लगाओ साल भर छांव भी देगा मौसम आने पर फल भी देगा।" मां का मन मौल सिरी का पेड़ लगाने का था ताकि फूलों से आंगन भर जाये सारा घर महक उठेगा।

बाबूजी ने कहा "बरगद दीर्घ जीवी पेड़ होता है, पत्ते बड़े बड़े होने से छाया भी धनी होती है, आंगन में खड़ा पेड़ शुद्ध हवा भी देगा उस समय तो लोगों को यह समझाना कठिन था कि बरगद कार्बन डाई ऑक्साइड का शोषण कर प्राण वायु ऑक्सीजन देने में अधिक समर्थ होता है तो दादी से बोले" अम्मा वट सावित्री की पूजा करने, चिलचिलाती धूप में उतनी दूर तालाब तक जाना नहीं पड़ेगा फिर मुहल्ले की अन्य महिलायें भी तो हमारे घर आकर पूजा कर सकेंगीं न। चुपके से मां के कान में बोले

“तुम्हारे पैर में फिर कभी छाले नहीं पड़ेंगे।” इस तरह नन्हा सा पौधा आंगन में रोप दिया गया.. समय के साथ नन्हा पौधा शान से सर उठाये बड़ा होता रहा। हम बच्चे इसके चारों ओर दौड़ते, खेलते ही बड़े हुए। पेड़ बढ़ता रहा, छाया देने लगा तो बाबूजी ने इसके चारों ओर गोल चबूतरा बनवा दिया। सुबह दादाजी यहीं बैठकर खेती किसानी के लिये कामगारों, मजदूरों को हिदायतें देते। ठंड के दिनों में हम बच्चे यहीं बैठकर पढ़ते, दोपहर को मुहल्ले की महिलाओं की गोष्ठी जमती। कभी अचार, पापड़, बड़ी बनाने का काम भी बरगद की छांव में ही होता।

यह तो पुरानी बातें हैं, मैं जब किसी बात पर नाराज होती यहीं चबूतरे पर आसन जमा लेती, यही देखिये न इस उम्र में भी आदत बदली नहीं है बच्चों की याद आती है, अकेलापन महसूस होता है तो यहां आ बैठती हूं ऐसा लगता है बरगद मेरी बात सुन समझ रहा है, मेरे तो कोई भाई बहन है नहीं। तभी तो बचपन के साथी बरगद को ही मित्र, भाई, सुहृद समझती हूँ। इस बार छुट्टी न मिलने से बच्चे भी नहीं आये हैं, मन उदास हो गया है। चलूं कुछ लिख ही लेती हूँ।

बिसनी को आवश्यक हिदायतें दे कर कागज कलम साथ लिए प्रिय चबूतरे में बैठ गई। तभी बड़ा सा पत्ता सिर पर गिरा। लगा बूढ़े दादा ने प्यार से सिर को सहला दिया, आश्वस्त कर दिया चिंता क्यों मैं तो हूं न।

आ अब लौट चलें

–डॉ० शैलचन्द्रा
धमतरी, छत्तीसगढ़

तैंतीस वर्ष उस कस्बे में शिक्षक का कार्य करते हुए रामाधीन जी कुछ दिन पूर्व ही सेवामुक्त हुए थे। पूरा कस्बा उनको रामाधीन मास्टर के नाम से जानता-पहचानता था। उस कस्बे में उनका खूब मान-सम्मान था।

बेटे और पत्नी के बार-बार कहने पर उन्होंने रिटायरमेंट के बाद मिलने वाली राशि से शहर के एक कॉलोनी में एक मकान खरीद लिया।

आज वे उस कस्बे को छोड़कर शहर जा रहे थे। उस कस्बे के लोग उनके शहर जाने से दुःखी हो रहे थे। उनके पड़ोसी और संगी-साथी उन्हें शहर न जाने की सलाह दे रहे थे परन्तु रामाधीन जी पत्नी के आग्रह को टालने की हिम्मत न कर सके। पत्नी उन्हें बार-बार कहती-‘इस छोटे से कस्बे में क्या रखा है? वहां शहर में शान से रहेंगे।’

शहर आकर रामाधीन खुद को असहज महसूस करने लगे। आज छः महीने हो गए उन्हें शहर में रहते हुए पर उनका परिचय अपने पड़ोसी तक से नहीं हो सका।

उन्हें यहां का अकेलापन कचोटता। कस्बे में तो सुबह की चाय वे अपने पड़ोसियों के साथ पीते। सुबह-शाम अपने मित्रों के साथ टहलने जाते। रात को अड़ोस-पड़ोस के लोगों के साथ गप्पेबाजी होती। दिन भर आने -जाने वालों का तांता लगा रहता।

यहां शहर में किसी को किसी से कोई मतलब नहीं होता। सब अपने में बिजी रहते हैं। वे शहर आकर पछता रहे हैं पर पत्नी और बच्चों से कुछ कह नहीं पा रहे थे।

आज तो कुछ ऐसी घटना उनके साथ हुई कि उनका हृदय बेहद मर्माहत हो गया। उनके किसी पड़ोसी का सुखाया हुआ कोई कपड़ा उनके आंगन में उड़ कर आ गया था। वे खुशी-खुशी उस कपड़े को लेकर पड़ोसी के घर चले गए। पड़ोसी ने उस कपड़े को देखकर कहा- ‘नहीं, यह कपड़ा हमारा नहीं है। आप जैसे लोग ऐसे कई बहाने से दूसरों के घरों में झांक कर जायजा लेकर चोरी करते हैं। पता नहीं कहां से आकर यहां बस गए हैं क्या पता? आप यहां से तुरन्त चले जाएं नहीं तो मैं पुलिस को फोन करके बुलाता हूँ। तुम जैसों से कैसे निपटना है यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।’

इतना सुनना था कि रामाधीन जी के होश उड़ गए। उनके नेत्रों से दुःख और अपमान के अश्रु उमड़ आये।

अब उन्होंने तय कर लिया कि वापस वे अपने उसी कस्बे में अपनी पूरी जिंदगी बिताएंगे।

समय

-डॉ. रेशमा अंसारी,
प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हिंदी,
मैट्स विश्विद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़

मुनिया अपने पापा के साथ रोज की तरह प्रातः स्कूल जा रही थी। पापा का धीरे-धीरे बाइक चलाना उसे बिल्कुल पसंद नहीं था। वह प्रायः स्कूल जाते समय तेज रफ्तार भागती गाड़ियों को देखती थी और कल्पना करती थी कि काश पापा ऐसे ही फुर्रररर से गाड़ी भगाते तो उसे कितना मजा आता और वह भी समय से पहले स्कूल पहुंचकर अपने दोस्तों के साथ खूब मस्ती करती।

रोज की तरह वह फिर से स्कूल जा रही थी। बाइक पर सवार दो लड़के मुर्गियों से भरी ट्रॉली लटका कर तेज रफ्तार से गाड़ी को पार करते हुए निकले। गाड़ी की रफ्तार इतनी तेज थी कि पलक झपकते ही वे ओझल हो गयी। मुनिया ने अपने पापा को अपनी इच्छा बताई। उसने कहा, 'पापा कितना अच्छा लगता जब आप भी तेज रफ्तार से गाड़ी चलाते, हम भी फुर्र से उड़ते हुए जाते, समय से पहले पहुंच जाते।'

पापा ने मुस्कान भरते हुए कहा, 'हम समय पर पहुँचते हैं न बेटा।' अगले दिन रविवार को पापा अखबार पढ़ रहे थे। मुनिया ने झाँक कर देखा और कहा अरे पापा ये वही लड़के हैं जिन्होंने कल हमें ओवरटेक किया था और आगे निकल गए थे। पापा ने कहा, 'हाँ, बेटा ये समय से पहले आगे निकल गए और समय से पहले वहाँ पहुंच गए जहाँ अभी नही पहुंचना था।'

अखबार में उन लड़कों की फ़ोटो के साथ छपा था, मुर्गियों से भरी ट्रॉली के साथ मोटर साइकिल सवार दो युवकों की सड़क दुर्घटना में मृत्यु।

आश्रय

-सुमन शर्मा बाजपेयी,
सेचुरी कॉलोनी, डी.डी. नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

पॉच वर्षीय सुशांत सुबह से बेहद परेशान था, बार-बार दादी के कमरे में जाता। निर्विकार भाव से इधर-उधर देखता और वापस आ जाता। मम्मी-डैडी खाने के लिए आवाज दे-देकर थक गए थे, लेकिन उसने एक ही रट लगा रखा था, दादी वापस आओ डैडी समझा रहे थे, हम तीनों बाहर जाते हैं, दादी घर में अकेली हो जाती है, आश्रम में उनकी देखभाल होगी। चार लोगो का साथ है फिर हम हर महीने वहॉ जाया करेंगे तुम दिनभर उनके साथ रहना। ये बातें सुन-सुन सुशांत परेशान हो गयार। बार-बार दादी के साथ गुजारे एक-एक पल उसे रूला रहे थे।

तभी मम्मी की आवाज आयी रहने दीजिये उसे अकेला। दो दिन में अक्ल ठिकाने आ जाएगी। सुशांत कमरे से बाहर आया उसने अपने कपड़े बैग में रख लिया था। धीरे से हाथ जोड़कर बोला 'पापा मम्मी मैं दोपहर में स्कूल से वापस आ जाता हूं। आप ऑफिस से देर रात आते है फिर मम्मी का किटी पार्टी, क्लब जाना, मैं भी अकेला हो गया हूँ। आश्रम में चार लोगों के बीच हंस बोल लूंगा। आप महीने में एक बार आ जाना। सुशांत की दृढ़ता देख मम्मी डैडी उसी वक्त दादी को वापस लाने वृद्धाश्रम की ओर चल पड़े।

'मनलाभ मंजरी' युवा रचनाकार की युवा सोच

किसी लेखक के लिए उसकी स्वयं की पुस्तक का प्रकाशन होना अपने आप में किसी तमगे से कम नहीं है और अगर युवा लेखक हो तथा उसकी प्रथम कृति प्रकाशित हो रही हो तो बात ही क्या?

'महाकाव्य' शीर्षक से प्रारंभ हुआ इस कृति की यात्रा आदर्श शीर्षक नामक रचना पर समाप्त होती है। 112 पृष्ठीय कृति 'मनलाभ मंजरी' में रचनाकार श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव 'मनलाभ' ने अपनी रचनाओं के माध्यम से विभिन्न विषयों पर अपनी कलम चलाई है। वैसे सभी रचनाएं अच्छी है लेकिन जो रचनाएं मुझे अधिक अच्छी लगी उनमें योग नामक रचना में रचनाकार ने योग की महत्ता बताते हुए लिखा हैः-

आज दिवस है योग का, योग करे परिवार।/बचा रहेगा रोग से, योग करो नर नार।।

जीव बहुत अनमोल है, रखना इसका ध्यान।/रखना पावन सोच को, संयम रख आहार।।

विद्यालयों की महत्ता बताते हुए 'स्कूल चलें' में रचनाकार ने कहा हैः-

पहला घर है माता-पिता का,
दूसरा घर स्कूल कहलाता।
समय सच्चा बिताएं हम,
दुनिया सुंदर बनाएं हम।

वर्तमान परिवेश में ठगी का शिकार हर दूसरा तीसरा व्यक्ति कहीं न कहीं हो ही जाता है। 'ठग संसार' में रचनाकार ने कहा है-

बैठे ठग संसार में,
भल मानुष घबराय।
किस पर करता यकिन अब,
ठग भी ठग से जाय।।

गांवों की विशेषता बताते हुए 'गांव' नामक रचना में लिखा है-

चिंतित मन यह सोचता,
कहां जमाया पांव।
बरगद पीपल नीम की,
मिलती कम है छांव।।
रहा गांव से दूर पर,
हुआ गांव ना दूर।
मन मंदिर में आज भी,
बसता अपना गांव।।

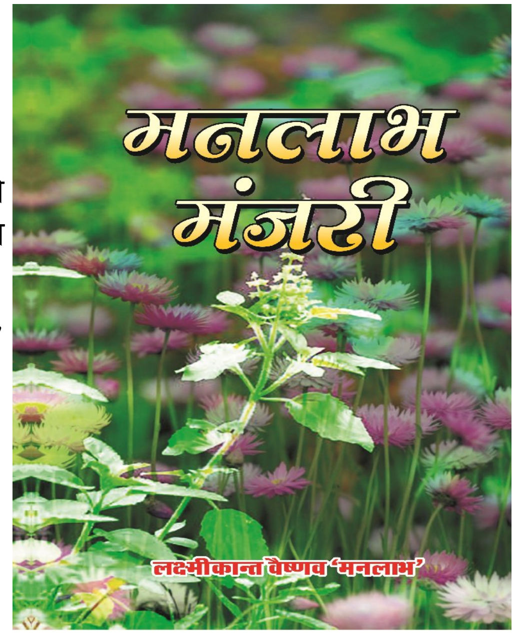

मनलाभ दोहा 'मानवी' में लिखते है-

वत्सल वाणी बोलती, विनयशील व्यवहार।
दुःख दर्द सब छोड़कर,
सेती जग नर नार।।

मजदूरों की दशा और दिशा पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैः-

मजबूर नहीं, मजदूर हूँ....
मेहनत की रोटी खाता हूँ,
पसीने से रोज नहाता हूँ,
अपना दर्द किसी को नहीं बताता,
ईमानदारी से कमाता हूँ।

जन्म दिवस दशरथ नंदन श्री राम का में लिखते हैः-

दशरथ पुत्र वधू बनी सीता आर्यवर्त नारायणी, /आज हम सब की बहू बेटी बनी, नारी नहीं चिंगारी।

अन्नदाता नामक शीर्षक कविता में लिखते हैः-

आस जगा कर खेत में, रोपा बोता बीज।/बीता भर का धान अब, लगता खूब अजीज।।

कुछ अन्य रचनाएं जो अच्छी है पिता का प्रणाम, संक्षिप्त गीता, मनलाभ जीवन्त दोहे, रंगमंच और किरदार, प्रभु परशुराम, दंसानियत, मासूम मच्छर, कवि कल्पना आदि रचनाए।

मैं रचनाकार, पुस्तक के लेखक श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव जी को बधाई एवं इस संग्रह की सफलता की कामना करता हूं।

> सोच तू आसमान है, लेकिन नीचे खाई भी है। उठो, उड़ो लेकिन यह ध्यान रखकर कि नीचे खाई और जमीन भी है। दाऊजी

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1-20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिए: पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मृति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मृति सम्मान, बचपना सम्मान 2-20 से 40 वर्ष के लिए: काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री 3-40 वर्ष से ऊपर के लिए: डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, 4-सभी आयु वर्ग के लिए: विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री, 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करें:
अंतिम तिथि: 15 मार्च 2022

विशेष:

1- काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, साहित्य रत्न, साहित्य गौरव, साहित्य श्री एवं पत्रकार रत्न के लिए कम से कम 100 पृष्ठ की एक विषय एवं एक ही विधा की पुस्तक तीन प्रतियों में (हस्त लिखित पाण्डुलिपि के संदर्भ में 150 पृष्ठ से अधिक, छायाप्रति के प्रत्येक पृष्ठ पर मौलिक एवं स्वप्रमाणित होना अनिवार्य), साथ में रुपये पांच सौ की सहयोग राशि अपेक्षित है।

2- प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

3- खाता धारक का नाम: 'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान' बैंक : युनियन बैंक ऑफ इंडिया शाखा : प्रीतम नगर, इलाहाबाद खाता संख्या: 538702010009259 आई.एफ.एस. कोड: यूबीआईएन0553875 अथवा 9335155949 पर गूगल पे के माध्यम से।

4- प्रविष्टि के साथ जमा रसीद की छाया प्रति, जीवन परिचय जिसमें ईमेल या ह्वाट्सएप नंबर या दोनों का उल्लेख करें, एक फोटो, विशेष 01 को छोड़कर अन्य के लिए उपलब्धियों के लिए प्रमाणिक विवरण जैसे समाचार पत्रें की छाया प्रति, कुछ विशेष प्रमाण पत्रों/सम्मान पत्रों की स्व प्रमाणित छाया प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी-93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011,

ह्वाटसएप नं0: 9335155949, sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

शुभकामना

आयरा वैष्णव 'ओशी'

प्रथम जन्म दिवस 03 मार्च

अभि लक्ष्मी बहु की सुता, अवतरित मार्च तीन।
किलकारी घर अंगना, फूलत मन: मलीन ॥

ओसी द्वादश मास की, सज जिमि पुतली खास।
आज प्रथम साल गिरहहि, मुदित सब जन निवास।

पीला लाल पहन सजी, बैठ हरी मैदान।
सेज मिल हरी दूब की, हूँ छोटी अनजान॥

दादा जी - महादेव दास वैष्णव
जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

छठवीं पुण्यतिथि

छूटा बहना हाथ जब, कष्ट मिले अतिरेक।
बिलक रहा मनलाभ है, टूटे स्वप्न अनेक।

सुश्री भारतीय वैष्णव 'सुमन'

7 मार्च

भैय्या – लक्ष्मीकान्त वैष्णव 'मनलाभ',
जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

आपका अपना, अपनों के द्वारा निर्मित उत्पाद,
भारतीय संस्कृति के उत्पाद
आपका पंसदीदा उत्पाद
भारतीयता बेमिशाल, गुणवत्ता लाजवाब

विभिन्न प्रकार के स्मृति चिन्ह, मेडल, सजावटी समानों,
गृहपयोगी समानों के लिए एक भरोसे मंद, सस्ता और उपयोगी उत्पाद
संपूर्णम! उत्पाद

(विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा प्रशिक्षित युवाओं, महिलाओं,
निराश्रितों द्वारा निर्मित) श्री पवहारी शरण द्विवेदी स्मृति न्यास द्वारा विपणन

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा [illegible] से मुद्रित कराकर [illegible] से प्रकाशित किया
डाक पंजीयन संख्या : [illegible] आर.एन.आई. नं. [illegible] सम्पादक : गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी